नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 033
दि. 05.11.2025,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

104 साल की उम्र में मिला इंसाफ: बिना अपराध 43 साल जेल में काटने वाले भारतीय मूल के सुब्रमण्यम वेदम की कहानी ने झकझोरा अमेरिका को

(जीएनएस)। वॉशिंगटन। यह कहानी किसी फिल्म की पटकथा जैसी लगती है, मगर यह हकीकत है—एक भारतीय मूल के बुजुर्ग की, जिसने बिना अपराध किए अपनी ज़िंदगी के 43 साल अमेरिकी जेल में बिता दिए। जब सच्चाई सामने आई और न्यायालय ने उसकी निर्दोषता स्वीकार की, तब उसकी उम्र 104 साल थी। सुब्रमण्यम "सुबू" वेदम नाम के इस शख्स की ग़लत सजा ने न सिर्फ अमेरिका की न्याय व्यवस्था को सवालों के घेरे में खड़ा कर दिया है, बल्कि इंसाफ की देरी से होने वाली त्रासदी की एक जीवित मिसाल भी पेश की है। सुब्रमण्यम वेदम का जन्म भारत में हुआ था। वे अपने माता-पिता के साथ केवल नौ महीने की उम्र में कानूनी रूप से अमेरिका चले गए थे। उनका बचपन और जवानी पेंसिल्वेनिया के स्टेट कॉलेज में बीता, जहां उनके पिता पेन स्टेट यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर थे। वेदम की ज़िंदगी शांतिपूर्ण थी, वह अमेरिकी नागरिकता के लिए आवेदन कर चुके थे और उनका आवेदन 1980 में मंज़ूर भी हो गया था। मगर किस्मत ने अचानक ऐसा मोड़ लिया कि उनका पूरा जीवन बदल गया।

1982 में उनके एक दोस्त थॉमस किन्सर की हत्या हुई। पुलिस जांच में वेदम को आखिरी बार किन्सर के साथ देखा गया व्यक्ति बताया गया। न कोई प्रत्यक्ष गवाह था, न कोई ठोस सबूत, फिर भी 1983 में उन्हें हत्या के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। मुकदमा चला, और जूरी ने उन्हें दोषी ठहराते हुए आजीवन कारावास की सजा सुना दी। वेदम ने अपनी निर्दोषता की गुहार लगाई, लेकिन अपील भी खारिज कर दी गई। अगले चार दशकों तक वह जेल की अंधेरी कोठरी में अपने निर्दोष होने की बात साबित करने की कोशिश करते रहे।

इस साल अगस्त में उनकी किस्मत ने करवट ली। पेंसिल्वेनिया के एक

न्यायाधीश ने उनके वकीलों द्वारा प्रस्तुत नए बैलिस्टिक सबूतों को देखने के बाद माना कि पुलिस और अभियोजकों ने दशकों पहले महत्वपूर्ण सबूतों को छिपा लिया था। अदालत ने फैसला सुनाते हुए कहा कि हत्या के मामले में वेदम के खिलाफ कोई विश्वसनीय सबूत नहीं है और उनकी दोषसिद्धि को रद्द कर दिया गया। आदेश हुआ कि उन्हें तुरंत रिहा किया जाए।

लेकिन रिहाई की घड़ी भी उनके लिए राहत नहीं बन सकी। 3 अक्टूबर को जब जेल के दरवाज़े खुलने थे, तभी अमेरिकी आव्रजन अधिकारियों ने उन्हें हिरासत में ले लिया। कारण बताया गया कि कई दशक पहले उन्होंने एलएसडी (नशीले पदार्थ) वितरण के एक मामूली आरोप में 'नो कॉन्टेस्ट' याचिका दी थी, जिसके आधार पर अब उन्हें भारत निर्वासित करने की कोशिश की जा रही है।

वेदम को लुइसियाना के अलेक्जेंड्रिया स्थित एक हिरासत केंद्र में रखा गया है, जहां से निर्वासन के लिए विशेष हवाई पट्टी भी संचालित होती है। हालांकि, उनके वकीलों और परिवार ने अदालत में गुहार लगाई, जिसके बाद दो अमेरिकी अदालतों ने हस्तक्षेप करते हुए उनके निर्वासन पर रोक लगा दी है।

पहले एक आव्रजन न्यायाधीश ने कहा कि जब तक बोर्ड ऑफ इमिग्रेशन अपील्स (बीआईए) यह तय नहीं करता कि वेदम के मामले की पुनर्समीक्षा की जाए या नहीं, तब तक उनका निर्वासन स्थगित रहेगा। वहीं, पेंसिल्वेनिया की एक जिला अदालत ने भी उनके निर्वासन पर अस्थायी रोक लगाई है। अब इस प्रक्रिया में कई महीने लग सकते हैं, लेकिन अदालतों के इन फैसलों ने 104 वर्ष के इस बुजुर्ग को फिलहाल राहत दी है।

वेदम के परिवार ने बताया कि वह अब भी मानसिक और शारीरिक रूप से बेहद कमजोर हैं, मगर उनका मनोबल अटूट है। उनकी बेटी ने कहा, "हमने पापा को कभी हार मानते नहीं देखा। वे हर दिन कहते थे — सच्चाई को एक दिन ज़रूर जीत मिलती है।" कानूनी विशेषज्ञों का कहना है कि यह मामला अमेरिकी न्याय व्यवस्था की सबसे बड़ी भूलों में गिना जाएगा। 43 वर्षों तक निर्दोष व्यक्ति का जेल में रहना न केवल न्यायिक चूक का उदाहरण है, बल्कि यह यह भी दिखाता है कि साक्ष्यों की सत्यता और अभियोजन की पारदर्शिता कितनी अहम है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस घटना ने मानवाधिकार संगठनों और कानूनी सुधार संस्थाओं का ध्यान खींचा है। एमनेस्टी इंटरनेशनल ने कहा कि वेदम का मामला न्याय प्रणाली में सुधार की एक चेतावनी है, और यह दिखाता है कि निर्दोष व्यक्ति को सजा मिलने का दर्द कितना भयानक हो सकता है।

सुब्रमण्यम वेदम अब अमेरिका में न्याय की नई उम्मीद के प्रतीक बन चुके हैं। उन्होंने कहा, "मैंने अपनी ज़िंदगी का सबसे अच्छा हिस्सा जेल की सलाखों के पीछे बिताया, लेकिन अब भी मैं किसी से नफ़रत नहीं करता। मैं बस इतना चाहता हूँ कि किसी और को वो न भुगतना पड़े जो मैंने भुगता।"

यह कहानी केवल एक व्यक्ति की नहीं है, बल्कि इंसाफ में हुई देरी से टूटे विश्वास की कहानी है। 104 साल की उम्र में भी जब इंसाफ ने दस्तक दी, तो पूरी दुनिया को एहसास हुआ कि सच्चाई देर से ही सही, लेकिन आखिरकार सामने आ ही जाती है।

गाजा पर अंतरराष्ट्रीय शासन की तैयारी — दो वर्षों के लिए अमेरिका और सहयोगी देशों को सौंपा जा सकता है नियंत्रण

(जीएनएस)। वाशिंगटन। मध्य पूर्व की राजनीति एक बार फिर बड़े बदलाव के मुहाने पर खड़ी है। गाजा पट्टी में लंबे समय से जारी संघर्ष, तबाही और अस्थिरता के बीच अब संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद एक ऐसा ऐतिहासिक प्रस्ताव लाने जा रही है जो आने वाले वर्षों में पूरे क्षेत्र की दिशा बदल सकता है। इस प्रस्ताव के अनुसार, गाजा पर शासन और सुरक्षा की जिम्मेदारी दो वर्षों के लिए अमेरिका और उसके सहयोगी देशों को सौंपी जा सकती है, ताकि वहां शांति बहाल की जा सके और स्थायी शासन की नींव रखी जा सके।

अमेरिका की ओर से तैयार किए गए इस प्रस्ताव का उद्देश्य गाजा को हिंसा और आतंक से मुक्त करके एक स्थिर, मानवीय और पुनर्निर्मित क्षेत्र बनाना है। अमेरिकी प्रशासन ने इस योजना को "अंतरराष्ट्रीय स्थिरीकरण मिशन" का नाम दिया है। इसके तहत एक विशेष बल का गठन किया जाएगा जो गाजा की सुरक्षा, सीमाओं की निगरानी और मानवीय सहायता वितरण की व्यवस्था संभालेगा। इस बल में अमेरिका के अलावा उसके प्रमुख सहयोगी यूरोपीय देशों और मध्य पूर्व के कुछ साझेदार राष्ट्रों की भागीदारी होगी।

'एक्सियोस' नामक अमेरिकी वेबसाइट द्वारा प्राप्त मसौदे के अनुसार, यह प्रस्ताव हाल ही में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को भेजा गया है। द टाइम्स ऑफ इजराइल ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि इस योजना में गाजा पट्टी की सुरक्षा और पुनर्निर्माण को लेकर अभूतपूर्व प्रावधान किए गए हैं। इस मिशन को इजराइल और मिस्र के साथ मिलकर संचालित किया जाएगा, ताकि सीमाओं की निगरानी और सुरक्षा को मजबूत किया जा सके और किसी भी प्रकार की हिंसक गतिविधि को पनपने से रोका जा सके।

प्रस्ताव के मसौदे में कहा गया है कि यह अंतरराष्ट्रीय बल गाजा में नए फिलिस्तीनी पुलिस अधिकारियों को प्रशिक्षित करेगा, ताकि भविष्य में एक स्थानीय और आत्मनिर्भर शासन व्यवस्था विकसित हो सके। साथ ही इस बल को हमास जैसे सशस्त्र संगठनों को निशस्त्र करने, गाजा के पूर्ण विसैन्यीकरण की प्रक्रिया शुरू करने और किसी भी आतंकवादी ढांचे को नष्ट करने का अधिकार भी दिया जाएगा। गाजा के पुनर्निर्माण की दिशा में यह योजना विशेष रूप से इस बात पर केंद्रित है कि नागरिक जीवन को सामान्य बनाया जाए, आधारभूत संरचनाओं का पुनर्निर्माण किया जाए और शिक्षा, स्वास्थ्य तथा रोजगार के क्षेत्र में दीर्घकालिक सुधार किए जाएँ।

रिपोर्ट में यह भी उल्लेख है कि इस प्रस्ताव के तहत एक विशेष "शांति बोर्ड" का गठन किया जाएगा जो संक्रमणकालीन शासन का कार्यभार संभालेगा। यह बोर्ड अमेरिकी नेतृत्व में काम करेगा और गाजा की प्रशासनिक व्यवस्था, आर्थिक सुधार और मानवीय राहत अभियानों की निगरानी करेगा।

मिस्र और इजराइल की भूमिका इस योजना में महत्वपूर्ण बताई जा रही है। दोनों देशों को सीमाई इलाकों की सुरक्षा में भागीदार बनाया जाएगा ताकि किसी भी अवैध गतिविधि या आतंकवादी घुसपैठ को तुरंत रोका जा सके। इसके अलावा, यह भी प्रस्तावित है कि गाजा में शरणार्थियों के पुनर्वास और विस्थापित परिवारों की मदद के लिए अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों को जोड़ा जाएगा।

हालाँकि इस प्रस्ताव को लेकर मध्य पूर्व में मतभेद भी गहराने लगे हैं। फिलिस्तीनी प्राधिकरण और हमास ने इसे फिलिस्तीन की संप्रभुता पर सीधा आघात बताया है। उनका कहना है कि बाहरी शक्तियों द्वारा शासन करना फिलिस्तीनी जनता की आत्मनिर्णय की भावना के खिलाफ है।

गुजरात में असमय बारिश से भारी तबाही, मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल करेंगे प्रभावित इलाकों का दौरा

(जीएनएस)। गांधीनगर। गुजरात में पिछले कुछ दिनों से हो रही असमय बारिश ने कई जिलों में तबाही मचा दी है। खास तौर पर गिर सोमनाथ और जूनागढ़ जिले सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं, जहां खेतों में खड़ी फसलें बर्बाद हो गईं और ग्रामीण इलाकों में पानी भर गया। किसानों को भारी नुकसान झेलना पड़ा है। इस हालात का जायजा लेने के लिए मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल आज दोनों जिलों के गांवों का दौरा करेंगे।

राज्य सूचना विभाग ने अपने आधिकारिक बयान में बताया कि मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल आज गिर सोमनाथ जिले के कोडीनार तालुका के कडवासन गांव और जूनागढ़ जिले के मालिया तालुका के पाणीद्रा गांव का दौरा करेंगे। इस दौरान वे प्रभावित किसानों से सीधे संवाद करेंगे, फसल और खेतों को हुए नुकसान का आकलन करेंगे तथा राहत कार्यों की प्रगति की समीक्षा करेंगे। मुख्यमंत्री के साथ गिर सोमनाथ जिले के दौरे में कैबिनेट मंत्री अर्जुनभाई मोढवाडिया और डॉ. प्रद्युमनभाई वाजा भी रहेंगे, जबकि जूनागढ़ जिले में उनके साथ राज्य मंत्री कौशिक वेकरिया मौजूद रहेंगे। प्रशासनिक अधिकारियों की एक टीम पहले ही प्रभावित क्षेत्रों में भेजी जा चुकी है, ताकि किसानों को तुरंत सहायता दी जा सके।

गुजरात में पिछले सप्ताह हुई भारी बारिश से कपास, मूंगफली और ज्वार जैसी फसलों को भारी नुकसान हुआ है। कई निचले इलाकों में पानी भर जाने से सड़कों पर आवागमन भी बाधित हुआ है। स्थानीय प्रशासन ने प्रभावित किसानों से नुकसान का ब्यौरा एकत्रित करना शुरू कर दिया है। मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल ने कहा है कि राज्य सरकार किसानों को इस संकट में अकेला नहीं छोड़ेगी और जल्द से जल्द राहत राशि प्रदान की जाएगी।

उन्होंने यह भी निर्देश दिया है कि सर्वे टीम पारदर्शिता के साथ काम करे और हर प्रभावित किसान को नुकसान के अनुपात में सहायता मिले।

गुजरात के ग्रामीण इलाकों में लोगों का कहना है कि इस बार की बारिश ने न केवल फसलों को नुकसान पहुंचाया है बल्कि पशुओं के चारे और गोदामों में रखे अनाज को भी खराब कर दिया है। कई किसान अब राज्य सरकार से शीघ्र आर्थिक सहायता की उम्मीद लगाए बैठे हैं। मुख्यमंत्री का यह दौरा ऐसे समय में हो रहा है जब किसानों की हालत बेहद चिंताजनक है और पूरा ग्रामीण इलाका सरकार की राहत योजना पर नजरें टिकाए हुए है।

पूर्व प्रधानमंत्री को शरण देने पर भड़का पेरू — मेक्सिको से तोड़े राजनयिक संबंध, दोनों देशों में बढ़ा तनाव

(जीएनएस)। लीमा। दक्षिण अमेरिका में कूटनीतिक भूचाल आ गया है। पेरू की पूर्व प्रधानमंत्री बेटसी शावेज द्वारा मेक्सिको दूतावास में शरण लेने के बाद पेरू सरकार ने सोमवार को मेक्सिको से अपने राजनयिक संबंध समाप्त करने की घोषणा कर दी। यह कदम दोनों देशों के बीच लंबे समय से simmer रहे राजनीतिक तनाव को खुलकर सतह पर ले आया है। पेरू सरकार ने इसे अपने संप्रभु अधिकारों पर सीधा हमला बताते हुए मेक्सिको पर पेरू के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का आरोप लगाया है। लीमा में आयोजित एक प्रेस वार्ता में पेरू के विदेश मंत्री ह्यूगो डे जेला ने कहा कि सरकार को सोमवार सुबह सूचना मिली कि बेटसी शावेज मेक्सिको के दूतावास में छिपी हुई हैं। उन्होंने इस स्थिति को "स्पष्ट रूप से शत्रुतापूर्ण कार्रवाई" बताते हुए कहा, "मेक्सिको के वर्तमान और पूर्व राष्ट्रपतियों ने बार-बार पेरू की न्यायिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं पर टिप्पणी की है, जिससे हमारे आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप हुआ है। ऐसे में हमारे पास संबंध समाप्त करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा।" बेटसी शावेज, जो पेरू के पूर्व राष्ट्रपति पेड्रो कास्टिलो की सरकार में प्रधानमंत्री और श्रम मंत्री रह चुकी हैं, उन पर 2022 के अंत में सत्ता के दुरुपयोग और साजिश रचने के आरोप लगे थे। दिसंबर 2022 में राष्ट्रपति कास्टिलो ने संसद भंग करने की असफल कोशिश की थी, जिसके तुरंत बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। इसी मामले में शावेज पर भी साजिश में शामिल होने का आरोप लगा और जून 2023 तक वह जेल में रहीं। अदालत से अस्थायी रिहाई मिलने के बाद वह मुकदमे की प्रक्रिया में हिस्सा ले रही थीं। हालांकि अब उनके अचानक मेक्सिको दूतावास में शरण लेने की खबर ने पेरू की राजनीति में भूचाल ला दिया है। सरकार का कहना है कि शावेज ने न्यायिक प्रक्रिया से बचने और संभावित गिरफ्तारी से छिपने के लिए मेक्सिको का सहारा लिया है। विदेश मंत्री ह्यूगो डे जेला ने कहा, "हमने मेक्सिको से कई बार आग्रह किया था कि वे हमारे आंतरिक मामलों में दखल न दें, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने एक आरोपी व्यक्ति को शरण देकर हमारे देश की संप्रभुता को चुनौती दी है।"

इस पूरे घटनाक्रम पर अब तक मेक्सिको की ओर से कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं आई है। लेकिन पेरू के राजनीतिक विश्लेषक इसे "कूटनीतिक युद्ध की शुरुआत" मान रहे हैं। उनका कहना है कि मेक्सिको की यह कार्रवाई संभवतः मानवाधिकारों के आधार पर शरण देने के उद्देश्य से की गई होगी, लेकिन पेरू इसे राजनीतिक शरण मान रहा है, जिससे दोनों देशों के संबंध और बिगड़ सकते हैं।

शावेज के वकील राउल नोब्लेसिला ने स्थानीय रेडियो आरपीपी से कहा कि उन्हें कई दिनों से अपनी मुवक्किल से संपर्क नहीं हो पा रहा है। उन्होंने कहा, "मुझे इस बात की जानकारी नहीं थी कि वह मेक्सिको दूतावास में शरण ले चुकी हैं। अगर यह सच है, तो यह संकेत है कि उन्हें अपनी सुरक्षा को लेकर गंभीर खतरा महसूस हो रहा था।" राजनीतिक पृष्ठभूमि पर गौर किया जाए तो यह विवाद नया नहीं है। 2022 में जब पेड्रो कास्टिलो को हटाकर गिरफ्तार किया गया था, तब भी मेक्सिको के राष्ट्रपति आंद्रेस मैनुअल लोपेज ओब्रादोर ने खुलेआम कास्टिलो के समर्थन में बयान दिया था और उन्हें "लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित लेकिन साजिश का शिकार" बताया था। पेरू ने तब भी मेक्सिको के राजदूत को निष्कासित कर दिया था। अब, जब पूर्व प्रधानमंत्री शावेज ने मेक्सिको दूतावास में शरण ली है, तो यह मामला एक बार फिर दोनों देशों के रिश्तों को गहरी खाई में धकेल सकता है।

बलोचिस्तान फिर दहला — सेना के काफिले पर घातक हमला, कैप्टन सहित कई अधिकारी घायल, कई जवानों के हताहत होने की आशंका

(जीएनएस)। क्वेटा। पाकिस्तान के अशांत बलोचिस्तान प्रांत में रविवार को एक बार फिर आतंकवाद ने अपने खूनी पंजे फैलाए। अरावन जिले के झाओ क्षेत्र में पाकिस्तानी सेना के काफिले पर किए गए घातक हमले ने पूरे क्षेत्र में दहशत फैला दी। बताया जा रहा है कि इस हमले में सेना के एक कैप्टन आरिजा और दो अन्य वरिष्ठ अधिकारी गंभीर रूप से घायल हो गए हैं, जबकि कई जवानों के हताहत होने की आशंका जताई जा रही है। इस भीषण हमले में सेना के कई वाहन पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए हैं और गोलीबारी कई घंटों तक जारी रही। स्थानीय मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, यह सैन्य काफिला किसी अभियान से लौट रहा था जब पहले से घात लगाए बैठे हथियारबंद उग्रवादियों ने उस पर अचानक अंधाधुंध गोलियां बरसानी शुरू कर दीं। 'द बलोचिस्तान पोस्ट' ने सूत्रों के हवाले से बताया कि हमलावरों ने ऊँचाई से फायरिंग की, जिससे सेना के जवानों को शुरुआती दौर में भारी नुकसान झेलना पड़ा। झाओ क्षेत्र की घनी पहाड़ियों और दुर्गम इलाकों के कारण सुरक्षा बलों को पलटवार करने में कठिनाई हुई। दोनों ओर से लगभग तीन घंटे तक गोलीबारी चलती रही, जिसके बाद हमलावर पहाड़ी रास्तों से फरार हो गए। घायल अधिकारियों और सैनिकों को तत्काल हेलिकॉप्टर की मदद से सीएमएच खुजदार अस्पताल ले जाया गया, जहाँ कैप्टन आरिजा की हालत गंभीर बताई जा रही है। पाकिस्तानी सेना ने पूरे क्षेत्र को घेर लिया है और बड़े पैमाने पर सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया है। हालांकि अब तक किसी भी संगठन ने इस हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है, लेकिन सुरक्षा एजेंसियाँ इसे बलोच लिबरेशन आर्मी (BLA) या बलोच रिपब्लिकन आर्मी (BRA) जैसे अलगाववादी समूहों की साजिश मान रही हैं, जो वर्षों से पाकिस्तानी सुरक्षा बलों और सरकारी प्रतिष्ठानों को निशाना बनाते आ रहे हैं। बलोचिस्तान में यह हमला ऐसे समय हुआ है जब पिछले 60 घंटों में प्रांत के विभिन्न हिस्सों में हिंसा की कई घटनाएं दर्ज की गई हैं। इन घटनाओं में कम से कम चार लोगों की मौत और नौ अन्य घायल हुए हैं। सोराब जिले के छड़ बोदला इलाके में अज्ञात बंदूकधारियों ने एक नागरिक नबी बख्श को गोलियों से भून डाला। इसी तरह, तुर्बत और केच क्षेत्रों में भी हाल के दिनों में धमाकों और गोलीबारी की घटनाओं में वृद्धि हुई है। बलोचिस्तान, जो प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध होने के बावजूद विकास और बुनियादी ढांचे की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है, लंबे समय से असंतोष और विद्रोह की आग में जल रहा है। अलगाववादी संगठन इस क्षेत्र की स्वायत्तता और अधिक संसाधन अधिकारों की मांग करते रहे हैं। दूसरी ओर, पाकिस्तानी सेना का दावा है कि यह आंदोलन विदेशी शक्तियों के समर्थन से चलाया जा रहा है और इसका उद्देश्य देश को अस्थिर करना है। विश्लेषकों का कहना है कि बलोचिस्तान में बढ़ती हिंसा पाकिस्तान की आंतरिक सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती बन चुकी है। चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) की कई परियोजनाएँ इसी क्षेत्र से गुजरती हैं, जिसके कारण इन पर भी खतरा मंडराने लगा है। हमलों की लगातार बढ़ती घटनाओं से न केवल सुरक्षा बलों का मनोबल प्रभावित हो रहा है बल्कि आर्थिक निवेशकों में भी भय का माहौल बनता जा रहा है। क्वेटा से मिली जानकारी के अनुसार, सेना ने इस हमले के बाद अरावन और झाओ क्षेत्रों में कड़ी नाकेबंदी कर दी है। हर आने-जाने वाले वाहन की तलाशी ली जा रही है और सुदूर इलाकों में ड्रोन की मदद से निगरानी बढ़ा दी गई है।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

महिला क्रिकेट को नई ऊंचाई देगी कामयाबी

रविवार को भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने वो इतिहास रचा, जिसका दो दशक से इंतजार था। एक दिवसीय क्रिकेट का वर्ल्ड कप जीतकर उन्होंने उस कमी को पूरा किया, जो साल 2005 और 2017 में फाइनल में पहुंचकर भी हासिल न हो सकी थी। ऐसे वक्त में जब भारतीय महिला क्रिकेट टीम को खिताबी दौड़ में कमजोर माना जा रहा था, उसने सात बार की चैंपियन आस्ट्रेलिया टीम को सेमीफाइनल के एक रोमांचक मुकाबले में हरा दिया था। मुकाबले में मुंबई की जेमिमा रॉड्रिग्स ने 127 रन की तूफानी यादगार पारी खेली। लगता था शुरुआत में कई मैच हारने वाली भारतीय महिला टीम ने अपनी ऊर्जा फाइनल मुकाबले के लिये बचा रखी थी, जिसमें उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की टीम को 52 रन से हरा दिया। रविवार की रात हरमनप्रीत कौर की कप्तानी ने पासा ही पलट दिया। फिर उनकी टीम ने नवी मुंबई के डीवाई पाटिल स्टेडियम में चालीस हजार से ज्यादा दर्शकों के बीच जीत का जश्न जमकर मनाया। इस जुनूनी जश्न की वे हकदार भी थीं। साथ ही देश के एक अरब चालीस करोड़ लोगों को भी जीत के जश्न में डुबो दिया। लोग इस साल होने वाले कई दुखांत घटनाक्रमों को भुला इस जीत की लय में झूम उठे। यह सुखद आश्चर्य ही था कि टीम ने लगातार तीन हार झेलने के बाद टूर्नामेंट में दमदार वापसी की। सेमीफाइनल में लोग सात बार की चैंपियन आस्ट्रेलिया के खिलाफ भारतीय टीम को कमतर आंक रहे थे। सुखद आश्चर्य देखिये कि फाइनल मुकाबले में हरियाणा की उस शैफाली वर्मा ने करिश्माई पारी खेली, जो विश्व कप के शुरू होने से पहले टीम का हिस्सा भी नहीं थी। उसने अपने चयन को तार्किक साबित किया। इसी तरह दीप्ति शर्मा ने भी शानदार खेल का परिचय दिया। निश्चय ही महिला क्रिकेट टीम की यह शानदार जीत देश की उन लाखों बेटियों के सपनों को नयी ऊंचाइयां देगी, जो अपना आसमान हासिल करना चाहती हैं। निस्संदेह, विश्वकप में भारतीय महिला क्रिकेट टीम की शानदार जीत के दूरगामी परिणाम होंगे। इस खेल में टीम दीर्घकालिक वर्चस्व कायम रख सकती है। दरअसल, अब तक महिला क्रिकेट को दोयम दर्जे का माना जाता रहा है। दरअसल, जब से महिला खिलाड़ियों को पुरुष खिलाड़ियों के समान वेतन मिलने लगा और उन्हें आईपीएल-शैली की टी-20 लीग में दमखम दिखाने का मौका मिला, टीम के प्रदर्शन में अभूतपूर्व सुधार आया। धीरे-धीरे वे पुरुष क्रिकेट के सितारों की तरह आभा बिखेरने लगी। हालांकि, आगे की राह इतनी भी आसान नहीं है, उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। फिलहाल उनके पास इस कामयाबी का जश्न मनाने का मौका है। उल्लेखनीय है कि टीम में कई ऐसी खिलाड़ी हैं जिन्होंने तमाम आर्थिक-सामाजिक चुनौतियों का मुकाबला करके अपनी जगह बनायी। वे तपती पगडंडियों से गुजरने वाली बेटियों के लिये प्रेरणास्रोत हैं। इन खिलाड़ियों ने मैदान से पहले निजी जीवन में बड़ा संघर्ष किया। बेहद जटिल पृष्ठभूमि से आने के बावजूद वे विश्व विजेता टीम का हिस्सा बनी हैं। उनके साथ अभ्यास मैच खेलने के लिये लड़कियां नहीं होती थी, अतः वे शुरुआती क्रिकेट लड़कों की टीम के साथ खेलती थीं। उनके माता-पिता को समाज की छींटाकशी का भी शिकार होना पड़ता था। मध्यप्रदेश की क्रांति गौड़ ने आर्थिक बदहाली का जीवन जिया और प्रैक्टिस मैच के लिये पैसे की मदद न मिलने पर मां ने गहने तक बेचने पड़े। वक्त बदला है और आज मध्य प्रदेश सरकार ने उसे एक करोड़ का पुरस्कार देने की घोषणा की है। स्पिनर राधा यादव का परिवार मुंबई के कांदिवली में रहता है और उसके पिता सब्जी बेचते रहे हैं। उनकी प्रतिभा पहचानकर क्रिकेटर प्रफुल्ल नाइक ने उसके परिजनों को क्रिकेट खेलने के लिये मनाया। संगरूर जिले की रहने वाली सफल गेंदबाज अमनजोत के, पेशे से कारपेंटर पिता भूपेंदर सिंह ने उनकी प्रतिभा को पहचाना। उन्होंने अपना कामधंधा दांव पर लगाया। इसी तरह हिमाचल के एक किसान परिवार से आने वाली तेज गेंदबाज रेणुका ठाकुर ने अपने दिवंगत पिता के सपने को पूरा किया। निस्संदेह, इन लड़कियों की कामयाबी न केवल समाज में लड़कियों के प्रति नजरिया बदलेगी, बल्कि उन जैसी लाखों लड़कियों को क्रिकेट में भविष्य आजमाने के लिये भी प्रेरित करेगी।

पंजाब के लिए भी हरेक बिहारी की अहमियत

> बिहार में होने वाले विधानसभा चुनाव के जो भी नतीजे होंगे, उसका असर सबसे सीधे तौर पर पंजाब में महसूस किया जाएगा। क्योंकि पंजाब में बतौर प्रवासी श्रमबल बिहारी लोगों की बहुत बड़ी संख्या रहती है। बिहार विधानसभा के लिए भाजपा के चुनाव प्रचार के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कांग्रेस के खिलाफ अपनी टिप्पणी में पंजाब का जिक्र किया।

गत सप्ताह की शुरुआत में, बिहार के मुज़फ़्फ़रपुर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक टिप्पणी में पंजाब में काम करने वाले बिहारी प्रवासियों के लिए हीनता-सूचक शब्द बरतने के लिए कांग्रेस पार्टी को आड़े हाथ लिया, इसने पंजाब में 30 लाख की विशाल संख्या वाले कार्यबल पर फिर ध्यान खींचा, जबकि इनके बिना पंजाब में आज कोई भी परिवार काम नहीं चला सकता। लेकिन इससे पहले कि आप यह तय कर लें कि पंजाब में बिहार-यूपी की यह प्रवासी आबादी 21वीं सदी के गिरमिटिया, यानी ब्रिटिश राज द्वारा दुनियाभर में गन्ने के खेतों में काम करवाने को ले जाए गए बंधुआ मज़दूरों का आधुनिक रूप है या नहीं, आइए इस तर्क का संदर्भ समझते हैं।

सर्वप्रथम, पीएम मोदी की टिप्पणियां बिहार में बीजेपी की असाधारण पहुंच बनाने का हिस्सा हैं, जहां इसके सहयोगी दल के नीतीश कुमार पिछले 20 सालों से सत्ता पर काबिज हैं। इस अंतिम दौर में, बीजेपी के सभी शीर्ष नेता सियासी रूप से बेहद जागरूक इस राज्य में प्रचार के लिए अवतरित हैं - बीजेपी शासित छोटे से हरियाणा से भी 54 नेता चुनाव प्रचार में हैं, मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी भी दो बार जा चुके हैं।

द्वितीय, जैसे बीजेपी ने एक साल पहले हरियाणा में किया था, वह कोई कसर नहीं छोड़ेगी। वह विपक्ष को बिहार में सत्ता में आने से रोकने के लिए सब कुछ करेगी। बीजेपी जानती है कि महागठबंधन की जीत हुई तो बीजेपी की अजेयता की धारणा टूट जाएगी। साथ ही, यह विजय राहुल गांधी में 2026 में असम, केरल, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में नई ऊर्जा से चुनाव लड़ने का जोश भर देगी और फिर 2027 में पंजाब के लिए भी तैयार कर देगी।

यही वजह है कि मुज़फ़्फ़रपुर में नरेंद्र मोदी ने 2022 में तत्कालीन पंजाब कांग्रेस के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी द्वारा की गई 'यूपी के भैया' वाली टिप्पणी का मुद्दा उछाला। मोदी बखूबी समझते हैं कि कांग्रेस, चाहे कितनी भी कमज़ोर व बंटी हुई हो - आज पंजाब इकाई में मुख्यमंत्री पद के कम से कम पांच दावेदार हैं - फिर भी वह देश में एकमात्र पार्टी है जो बीजेपी के संभावित विरोधियों को एकजुट कर सकती है।

एक बार फिर, चन्नी को अपना बचाव करने को मजबूर होना पड़ा – उन्होंने कहा कि वह तो सिर्फ दिल्ली के आम आदमी पार्टी नेताओं को निशाना बना रहे थे, जो 2022 में पंजाब में जबरदस्ती घुसने की कोशिश कर रहे थे – लेकिन सच यह है कि यह शब्द, 'भैया', एक तुच्छता-सूचक संबोधन है, जो गिरते पंजाबी आत्म-सम्मान में श्रेष्ठता भाव जगाने की गर्ज से है। कभी दूध और शहद की धरती रहा पंजाब अब लगातार मुश्किलों में घिरता जा रहा, क्योंकि वह एक ही वक्त में कृषि संकट, जो कई दशकों की भीषणतम बाढ़ से और बढ़ गया व करीब नदारद उद्योग जैसी समस्या से जूझ रहा है, जिससे सूबे का स्थान राज्यवार जीडीपी के बरक्स कर्ज के अनुपात में देश में दूसरे नंबर पर है (सिर्फ अरुणाचल प्रदेश की हालत इससे पतली है)।

चूंकि प्रकृति को शून्यता पसंद नहीं, इसलिए कनाडा और दूसरे पश्चिमी देशों को पलायन कर रहे पंजाबियों की वजह से पैदा हुआ खालीपन भरने को –2021 की कनाडा की जनगणना के अनुसार, वहां करीब 10 लाख पंजाबी (कुल आबादी का 2.6 फीसदी) हैं – सीमांचल, पूर्वांचल, मगध और मिथिला से आए सांवले रंग के 'भैया' लोगों ने उनके द्वारा रिक्त रोजगार मौकों को भर दिया।

कहा जाता है कि पंजाब की 30 लाख प्रवासी आबादी में 60 प्रतिशत बिहार और 21 प्रतिशत उत्तर प्रदेश के हैं। मतलब, तीन करोड़ वाले राज्य में आबादी के हिसाब से हर दस पंजाब वासियों में एक प्रवासी है। वे पंजाब में दशकों से रह रहे, उनके बच्चे यहीं पैदा हुए और यहीं स्कूल जाते हैं – द ट्रिब्यून के पत्रकारों की खबरों के मुताबिक प्रवासी समुदाय के कई बच्चे गुरमुखी में पंजाबी मूल के स्कूली बच्चों की तुलना में बेहतर अंक ले रहे, हालांकि यह साफ नहीं कि यह शब्द, 'मूल निवासी', उन पर लागू होता है या नहीं।

आखिरकार, उसी देश में 'मूल निवासी' कौन है, जहां सैद्धांतिक रूप से सभी नागरिक समान हैं? और फिर, महाराष्ट्र में दिया जाने वाला 'धरती पुत्र' वाला तर्क पंजाब पर लागू नहीं होता–महाराष्ट्र में, 'मराठी मानुस' सिद्धांततः 'बाहरी लोगों' के खिलाफ नौकरी के अपने हक के लिए लड़ रहा है, उनके मामले में ये बाहरी लोग 'दक्षिण भारतीय' हैं, लेकिन पंजाब में काम करने को शायद ही कोई पंजाबी बचा है। तब, बिहार और उत्तर प्रदेश के 'भैया' के लिए पंजाब में मैदान खुला है, जिन्होंने न केवल लगभग कृषि संबंधी क्रियाकलाप पर कब्जा कर लिया, बल्कि घरेलू काम समेत शहरी रोजगार में भी बड़ी घुसपैठ कर ली। अगर आप उन्हें निकालें,तो काम नहीं चलेगा।

ऐसे कई किस्से हैं कि पंजाबी (यानी सिख) ज़मींदारों ने कोविड के बाद बिहार व यूपी के गांवों में बसें भेजीं, और इन 'भैया' लोगों से वापस आने की मिन्नतें कीं। बीते हफ़्ते, पंजाब में सतलुज और ब्यास नदियों व अन्य जलस्रोतों किनारे बिहारी त्योहार छठ उत्साह से मनाया गया। खासकर लुधियाना में, जहां प्रवासी आबादी तेज़ी से बढ़ी, छोटे-बड़े पंजाबी उद्योगपतियों में बिहारी मज़दूरों को छठ के लिए घर जाने और इसके बाद बिहार विधानसभा चुनाव तक वहीं ठहरने से रोकने की होड़ थी– उन्हें पता है कि यदि ये परिवार चले गए तो उनकी फैक्टरियां बंद हो जाएंगी और खेतों में काम रुक जाएगा। चंडीगढ़ स्थित इंस्टीट्यूट फॉर डेवलपमेंट एंड कम्युनिकेशन के अनुसार, इस साल पंजाब में एमएसपी के मुताबिक गेहूं-धान फसल चक्र का कुल कारोबार 49,000 करोड़ रुपये रहेगा, जबकि प्रवासी मज़दूरों का मेहनताना 30,000 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। एक स्थानीय पंजाबी मजदूर और प्रवासी श्रमिक की मज़दूरी में औसत अंतर करीब 7000 रुपये है। साफ है यदि स्थानीय लेबर काम पर रखी गयी तो वेतन खर्च बहुत बढ़ जाएगा।

फिर भी, तुच्छता-सूचक यह शब्द, 'भैया', कायम है। विचार करें तो, इसका इस्तेमाल ज़्यादातर पंजाब में अपनी उच्चता की खुशफहमी पाले धनाढ्य वर्ग करता है – इसमें वे लोग भी शामिल हैं जो दोपहर तक सोते हैं, शानदार कारें चलाते हैं, जिनने फोन में अपने धर्मगुरुओं के नंबर सेव हैं और कार्टियर सरीखी फैशन एक्सेसरीज़ के प्रदर्शन में पटियाला के पूर्व-राजपरिवार से होड़ लगाते हैं। निश्चित ही दोआबा के दलितों को-जिनमें सभी विदेश नहीं गये- उनसे कोई दिक्कत नहीं जो ईमानदारी से दिहाड़ी करते हैं, चाहे वे देश के किसी भी हिस्से से हों।

इसीलिए आपको प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की टिप्पणी गौर से सुननी चाहिए। जब वे 'यूपी/बिहार के भैया' शब्द का जिक्र करते हैं और इसके बाद 'गांधी परिवार के एक सदस्य' की आलोचना करते हैं कि 2022 में यह तंज कसे जाने के वक्त वह तालियां बजा रहा था। वे सिर्फ कांग्रेस को ही निशाना नहीं बना रहे बल्कि छठ उत्सव मनाने लिए खचाखच ट्रेनों में घर पहुंचे बिहारी मज़दूरों को भी लुभा रहे हैं कि वे बीजेपी के पक्ष में वोट दें – यह जताकर कि देखो कांग्रेस तुम्हारे बारे में क्या सोच रखती है।

साफ़ है कि बिहार में हर वोट मायने रखता है। इसके अलावा, बिहार में जो होगा, वह निश्चित रूप से बिहार तक सीमित नहीं रहेगा - उस चुनाव का नतीजा सबसे सीधे तौर पर पंजाब में महसूस किया जाएगा।

प्रेरणा

ब्रह्मचर्य की अग्नि परीक्षा: महर्षि अष्टावक्र की दिव्य विजय की कथा

एक समय की बात है, जब पृथ्वी पर ऋषि-मुनियों का तेज चारों दिशाओं में फैल रहा था। तप, संयम और आत्मज्ञान ही उस युग की वास्तविक संपत्ति मानी जाती थी। उसी कालखंड में महर्षि अष्टावक्र अपनी गूढ़ विद्या, गहन साधना और ब्रह्म ज्ञान के लिए प्रसिद्ध थे। उनका नाम मात्र सुनकर ही विद्वान नतमस्तक हो जाते थे, परंतु वे स्वयं सदैव विनम्र रहते थे। एक दिन उन्होंने सोचा कि अब समय आ गया है जब उन्हें गृहस्थ जीवन में प्रवेश करना चाहिए, ताकि ज्ञान और जीवन दोनों का संतुलन बना रहे। वे महर्षि वदान्य के आश्रम पहुँचे और नम्रता से बोले—"भगवन्! आपकी कन्या के गुण, शील और बुद्धि के विषय में मैंने बहुत कुछ सुना है। यदि आप अनुमति दें तो मैं उनसे विवाह करना चाहता हूँ।" महर्षि वदान्य ने उनकी विनम्रता और तेज देखकर कहा—"अष्टावक्र, तुम निःसंदेह महान तपस्वी हो, परंतु किसी भी संबंध से पहले मैं तुम्हारे आत्मसंयम की परीक्षा लेना चाहता हूँ। यदि तुम मेरी एक आज्ञा पूरी कर सको, तभी मैं अपनी कन्या तुम्हें सौंपूंगा।" अष्टावक्र ने आदरपूर्वक कहा—"गुरुदेव, आपकी आज्ञा मेरे लिए ब्रह्मवाक्य समान है। कृपया बताइए कि मुझे क्या करना होगा?" वदान्य ने गंभीर स्वर में कहा—"तुम उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान करो। अलकापुरी और हिमालय की श्वेत चोटियों को पार करते हुए कैलास पर्वत तक पहुँचो। वहाँ एक वृद्ध तपस्विनी निवास करती हैं। उनसे जाकर दर्शन करो और उनका

आशीर्वाद लेकर लौट आओ। यही मेरी शर्त है।" अष्टावक्र ने बिना एक क्षण गँवाए आज्ञा स्वीकार कर ली। वे तपस्वी वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर बढ़ चले। मार्ग कठिन था—घने जंगल, तीव्र हवाएँ, बर्फ से ढके पहाड़, और गूंजते हुए झरनों के बीच से उन्हें गुजरना पड़ा। परंतु उनका मन स्थिर था। वे चलते समय केवल एक ही मंत्र जप रहे थे—"ब्रह्मचर्यं बलं तपः।" उनके भीतर किसी भी सांसारिक आकर्षण का कोई स्थान नहीं था। जब वे हिमालय के मध्य भाग में पहुँचे, तभी एक दिव्य सुंदरी ने उनका मार्ग रोका। उसका रूप ऐसा था कि देवता भी विचलित हो जाएँ—कमल जैसी आँखें, चंद्रमा-सा मुख और सुगंध से भरा वातावरण। उसने मुस्कराकर कहा—"मुनिवर, आप इतने दूर अकेले क्यों जा रहे हैं? यह मार्ग भयंकर है, आप विश्राम करें। मैं आपकी सेवा कर सकती हूँ।" अष्टावक्र ने शांत भाव से उत्तर दिया—"देवि, मैं एक तपस्वी हूँ। मेरा लक्ष्य किसी स्थूल सुख की प्राप्ति नहीं, बल्कि आत्म-नियंत्रण की सिद्धि है। आप मुझे मातृवत् प्रतीत होती हैं, कृपया मुझे आशीर्वाद दें।" युवती ने पुनः अनेक रूप बदलकर उन्हें मोहित करने का प्रयास किया। कभी वह रुदन करने लगी, कभी रागिनी गाने लगी, कभी अपनी सुंदरता का प्रदर्शन करने लगी—परंतु अष्टावक्र का मन पर्वत की चोटी के समान अडिग रहा। उनके भीतर का तेज उस मोहिनी के सारे छल को भस्म करने लगा। अंततः वह युवती अपने वास्तविक रूप में प्रकट हुई। वह कोई साधारण स्त्री नहीं थी, बल्कि देवताओं द्वारा भेजी गई एक दिव्य शक्ति थी जो अष्टावक्र की परीक्षा लेने आई थी। वह बोली—"महर्षि! तुम्हारा तप, संयम और ब्रह्मचर्य अटल है। तुमने न केवल मेरी परीक्षा उत्तीर्ण की, बल्कि समस्त देवताओं को भी प्रसन्न किया है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र—सभी ने तुम्हें आशीर्वाद दिया है। अब तुम्हारा कार्य पूर्ण होगा, महर्षि वदान्य स्वयं अपनी कन्या का विवाह तुम्हारे साथ करेंगे। तुम्हारा यह विवाह केवल सांसारिक बंधन नहीं होगा, यह आत्मसंयम और सत्य की विजय का प्रतीक बनेगा। तुम्हारी संतान भी ज्ञानवान और तेजस्वी होगी।" यह कहकर वह दिव्य नारी अदृश्य हो गई। अष्टावक्र ने कैलास की दिशा में प्रणाम किया और वहीं ध्यान में बैठकर ईश्वर को धन्यवाद दिया कि उन्होंने उन्हें ब्रह्मचर्य के मार्ग पर दृढ़ बनाए रखा। जब वे वापस लौटे तो महर्षि वदान्य ने उनके मुखमंडल पर दिव्य तेज देखा। वह तेज ऐसा था जो केवल आत्मविजेता को प्राप्त होता है। वदान्य ने कहा—"पुत्र अष्टावक्र, तुम्हारे भीतर मैंने वही शक्ति देखी है जो केवल उन तपस्वियों में होती है जो इंद्रियों पर विजय पा चुके हैं। तुम्हारे संयम ने मुझे गर्व से भर दिया है। मैं अपनी कन्या तुम्हें ससम्मान प्रदान करता हूँ।" इस प्रकार महर्षि अष्टावक्र का विवाह महर्षि वदान्य की कन्या से हुआ। यह विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं था, बल्कि यह धर्म, तप और संयम की विजय का उत्सव था। कहते हैं कि उस विवाह के पश्चात् जब भी कोई साधक ब्रह्मचर्य की परीक्षा में पड़ता है, तो अष्टावक्र की कथा उसे स्मरण दिलाती है कि इच्छा और इंद्रिय पर विजय ही वह सेतु है जो मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाता है। ब्रह्मचर्य केवल स्त्रियों से दूर रहना नहीं, बल्कि अपने भीतर की कामनाओं को दिव्यता में रूपांतरित करना है। जब मनुष्य यह सीख जाता है, तब उसके लिए कोई भी असंभव कार्य असंभव नहीं रहता।

मैराथन मैन अनिल अंबानी कैसे कारोबारी दौड़ में पिछड़ कर कानूनी ट्रैक में फंस गये?

कभी भारत की कॉर्पोरेट दुनिया में "सफलता का प्रतीक" कहे जाने वाले अनिल अंबानी आज उस दौर में खड़े हैं जहाँ उनका नाम किसी बिज़नेस मॉडल से नहीं, बल्कि जांच एजेंसियों की रिपोर्ट से जुड़ा दिखाई देता है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की ओर से अनिल अंबानी की 7,500 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्तियों की कुर्की की गयी है जिसमें मुंबई के पाली हिल स्थित उनका घर और रिलायंस समूह की कई प्रतिष्ठित परिसंपत्तियाँ शामिल हैं। यह सिर्फ एक कारोबारी पर कार्रवाई नहीं है बल्कि भारत की आर्थिक जवाबदेही की दिशा में एक निर्णायक संदेश है। देखा जाये तो यह मामला सिर्फ एक उद्योगपति के पतन की कहानी नहीं, बल्कि उस तंत्र की परीक्षा है जो यह दिखा रहा है कि धन और प्रभाव अब कानून से ऊपर नहीं हैं। ईडी की जांच के मुताबिक, अनिल अंबानी समूह की कई कंपनियों— रिलायंस कम्युनिकेशंस (आर-कॉम), रिलायंस होम फाइनेंस, रिलायंस कमर्शियल फाइनेंस, रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर और रिलायंस पावर ने पिछले एक दशक में सरकारी और बैंकिंग संस्थानों से हज़ारों करोड़ रुपये जुटाए। आरोप है कि इनमें से बड़ी रकम समूह की अन्य कंपनियों या संबद्ध इकाइयों में स्थानांतरित की गई और कुछ धनराशि विदेशों में फर्जी कंपनियों के ज़रिए भेजी गई। ईडी ने यह भी दावा किया है कि "एक कंपनी से लिए गए ऋण का उपयोग दूसरी कंपनी के ऋण चुकाने या म्यूचुअल फंड में निवेश करने में किया गया", जो सीधे तौर पर ऋण की शर्तों का उल्लंघन था। यह तथाकथित "एवरग्रीनिंग मॉडल", जहाँ पुराने ऋण को नए ऋण से ढका जाता है, भारत की कॉर्पोरेट गवर्नेंस की सबसे पुरानी बीमारी रही है। हम आपको याद दिला दें कि अनिल अंबानी का उदय भारतीय उदारीकरण के स्वर्णकाल का प्रतीक था। उनके प्रोजेक्ट्स— टेलीकॉम से लेकर बिजली और इंफ्रास्ट्रक्चर तक, 90 के दशक की नई आर्थिक नीतियों के पोस्टर चाइल्ड थे। परंतु वही पूंजीवाद, जो प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करने के लिए था, धीरे-धीरे "कॉर्पोरेट कार्टेल" में बदल गया। रिलायंस कम्युनिकेशंस की गिरावट से शुरू हुआ वित्तीय संकट अब कानूनी संकट में तब्दील हो चुका है। पहले यह मामला "बाज़ार की असफलता" कहा जाता था, अब इसे "वित्तीय अनियमितता और मनी लॉन्ड्रिंग" के रूप में देखा जा रहा है। जब किसी समय बैंकों ने 31,000 करोड़ रुपये से अधिक की राशि इस समूह को ऋण स्वरूप दी थी, तब किसी ने यह नहीं सोचा था कि 19,000 करोड़ रुपये से अधिक राशि एनपीए बन जाएगी और उसके बाद जांच एजेंसियों को धनशोधन का पैटर्न मिलेगा। देखा जाये तो ईडी की ताज़ा कार्रवाई को महज़ एक उद्योगपति के खिलाफ कानूनी कदम के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह भारत की आर्थिक पारदर्शिता के उस नए युग की घोषणा है जिसमें "ब्रांड वैल्यू" से ज़्यादा "सत्यापन मूल्य" मायने रखता है। हाल के वर्षों में, प्रवर्तन एजेंसियों पर राजनीतिक पक्षधरता के आरोप लगते रहे हैं। परंतु जब ईडी जैसे संस्थान एक ऐसे उद्योगपति पर कार्रवाई करते हैं, जो कभी भारत की कॉर्पोरेट प्रतिष्ठा का चेहरा था, तो यह संकेत देता है कि आर्थिक अपराध की रेखा अब राजनीतिक समीकरणों से परे खींची जा रही है। अनिल अंबानी का मामला यह दिखाता है कि चाहे व्यक्ति कितना भी प्रभावशाली क्यों न हो, अगर उसने बैंकिंग व्यवस्था का दुरुपयोग किया, तो जवाबदेही तय होगी। देखा जाये तो यह कार्रवाई उस दौर में हुई है जब भारत की आर्थिक व्यवस्था में जनता का भरोसा दोतरफा दबाव में है। एक ओर कॉर्पोरेट घोटालों की गूंज, दूसरी ओर सरकारी एजेंसियों की विश्वसनीयता पर प्रश्न। ऐसे में जब ईडी सैंकड़ों पन्नों की जांच रिपोर्ट के आधार पर ठोस संपत्ति कुर्क करती है, तो यह केवल कानूनी प्रक्रिया नहीं बल्कि जनता के विश्वास की पुनर्स्थापना है। हालांकि यह भी सच है कि कई मामलों में ईडी की जांच वर्षों तक अदालतों में उलझ जाती है और ठोस दंडात्मक परिणाम सामने नहीं आते। इसलिए यह आवश्यक है कि यह प्रक्रिया पारदर्शी, तेज़ और न्यायोचित रहे क्योंकि यदि न्याय देर से मिलेगा, तो संदेश खो जाएगा। अनिल अंबानी केस से निकले व्यापक सबक को देखें तो भारत के निजी क्षेत्र में ऋण प्राप्ति की प्रक्रिया और उससे जुड़ी जवाबदेही पर यह मामला बड़ा सवाल उठाता है। बैंकिंग सेक्टर में केवल "क्रेडिट स्कोर" नहीं, बल्कि "कंट्रोल स्कोर" की भी निगरानी आवश्यक है, यानी, पैसा कहाँ और कैसे जा रहा है, इसका ट्रैक पारदर्शी होना चाहिए। देखा जाये तो लंबे समय तक भारत में उद्योग और सत्ता के रिश्ते इतने गहरे रहे कि जवाबदेही धुंधली पड़ गई है। हालांकि यह मामला यह संदेश देता है कि सत्ता से समीपता अब सुरक्षा कवच नहीं है। देखा जाये तो अनिल अंबानी की कहानी एक व्यक्ति की असफलता भर नहीं है, बल्कि उस प्रणाली का आईना है जिसने दशकों तक "कर्ज के सहारे साम्राज्य" खड़ा करने की अनुमति दी। अब जब वही व्यवस्था कठोर जांच के घेरे में है, तो यह न केवल एक उद्योगपति का पतन है, बल्कि पूरे कॉर्पोरेट संस्कृति के आत्ममंथन का क्षण भी है। यह कार्रवाई आने वाले समय के लिए संकेत देती है कि भारत का आर्थिक नियमन अब "कर्ज वितरण" की जगह "कर्ज अनुशासन" पर आधारित होगा। और जो भी व्यक्ति या संस्था सार्वजनिक धन का दुरुपयोग करेगी, वह कानून की पकड़ से नहीं बच पाएगी, भले ही उसका नाम अंबानी ही क्यों न हो। अनिल अंबानी के खिलाफ ईडी की कार्रवाई एक ऐतिहासिक मोड़ है क्योंकि यह केवल एक नाम पर नहीं, बल्कि उस सोच पर प्रहार है जो मानती थी कि प्रभावशाली लोग जवाबदेही से मुक्त हैं।

अभियान

झूठे प्रेम का भ्रम और आत्मबोध की दीर्घ यात्रा

एक प्राचीन नगर में एक सिद्ध महात्मा रहते थे, जिनका तेज ऐसा था कि उनके पास आते ही मनुष्य के भीतर के झूठ और दिखावे गल जाते थे। लोग कहते थे कि वे आत्मा के चिकित्सक हैं — जो देह के नहीं, बल्कि मोह और अज्ञान के रोग का उपचार करते हैं। एक दिन उसी नगर में एक नवयुवक, जिसकी आँखों में जिज्ञासा और हृदय में बेचैनी थी, अपने जीवन का उद्देश्य जानने के लिए उसी महात्मा के आश्रम पहुँचा। उसने चरणों में झुककर कहा, "गुरुदेव, मैं आत्मज्ञान चाहता हूँ। संसार मुझे भारी लगता है, कृपया मुझे सत्य का मार्ग दिखाइए।" महात्मा ने उसकी ओर देखा और कुछ देर मौन रहकर बोले, "वत्स, आत्मज्ञान केवल शब्दों से नहीं, अनुभव से मिलता है। इसके लिए पहले तुम्हें अपने भीतर के बंधनों को तोड़ना होगा। मैं तुझे उपदेश तभी दूँगा जब तू इस योग्य हो जाएगा।" युवक ने विनम्रता से सिर झुकाया और उनकी सेवा में लग गया। वह प्रतिदिन प्रातःकाल नदी से जल लाता, हवन के लिए सूखी लकड़ियाँ खोजता, और पूरे आश्रम के कार्यों को हर्षपूर्वक करता। उसका न कोई स्वार्थ था, न कोई शिकायत। महात्मा ने देखा कि उसके भीतर त्याग की भावना है, परंतु भीतर ही भीतर एक मोह अब भी जीवित है — परिवार का, प्रेम का, और अपने "प्रियजनों" के दिखावटी स्नेह का। कुछ महीनों बाद महात्मा ने उसे बुलाया और कहा, "बेटा, जीवन का उद्देश्य आत्मकल्याण है। जो व्यक्ति इस सत्य को जान लेता है, वह संसार के भय और मोह से मुक्त हो जाता है।" युवक ने गंभीर होकर कहा, "गुरुदेव, आपकी बात में सच्चाई है, लेकिन मेरे घर में माता-पिता वृद्ध हैं। मेरी पत्नी मुझसे गहरा प्रेम करती है। यदि मैं उन्हें छोड़ दूँ तो वे जी नहीं पाएंगे। मैं कैसे इस संसार से विमुख हो जाऊँ?" महात्मा मुस्कुराए और बोले, "वत्स, यह जो तू 'प्रेम' कहता है, वह वास्तव में मोह है। प्रेम कभी बंधन नहीं बनाता, वह स्वतंत्रता देता है। यदि तू इस सत्य को देख सके, तो तेरा भ्रम टूट जाएगा।" युवक बोला, "गुरुदेव, परंतु यदि मैं एक दिन के लिए भी गायब हो जाऊँ तो मेरा घर हिल जाएगा। मैंने आपके पास आने के लिए भी झूठ कहा कि व्यापार के काम से बाहर जा रहा हूँ। यदि मैं वास्तव में घर छोड़ दूँ तो शायद मेरी पत्नी अपने प्राण त्याग दे।" महात्मा ने शांत स्वर में कहा, "कोई नहीं मरेगा बेटा। सब अपने-अपने जीवन में लगे रहेंगे। तू केवल यह परीक्षा कर ले — तेरा प्रेम कितना सच्चा है।" युवक कुछ क्षण मौन रहा, फिर बोला, "गुरुदेव, मैं तैयार हूँ। सत्य को जानने की कीमत चाहे जितनी हो, मैं चुकाऊँगा।" महात्मा ने उसे एक गुप्त प्राणायाम सिखाया जिससे शरीर मृत समान प्रतीत होता था। उन्होंने कहा, "अब तू अपने घर जा और बीमारी का नाटक कर। जब समय आए, इस प्राणायाम से अपनी श्वास को सूक्ष्म कर लेना। देखना, तेरे परिवार का सच्चा रूप तेरे सामने प्रकट होगा।" युवक घर लौटा और बीमार पड़ने का अभिनय करने लगा। कुछ ही दिनों में उसने प्राणायाम का प्रयोग किया और श्वास रोक ली। वैद्यों ने जाँच की और उसे मृत घोषित कर दिया। घर में कोहराम मच गया — माता-पिता रोने लगे, पत्नी मूर्छित हो गई, और पड़ोसी शोक में डूब गए। सारी तैयारी अंतिम संस्कार की होने लगी। तभी नगर के लोग चिल्लाए — "महात्मा जी आ रहे हैं!" सबने आशा की कि शायद वे कोई चमत्कार करेंगे। महात्मा शांत भाव से भीतर आए और बोले, "यह युवक विशिष्ट है, इसके प्राण वापस लाए जा सकते हैं। परंतु एक शर्त है — किसी को अपना जीवन इसे देना होगा।" उन्होंने एक कटोरा दूध मँगवाया, उसमें कुछ मंत्र पढ़े, और उसमें थोड़ी राख मिलाई। फिर बोले, "जो भी इस युवक से सच्चा प्रेम करता है, वह यह दूध पी ले। उसके प्राण समाप्त होते ही यह युवक जीवित हो जाएगा।" सन्नाटा छा गया। सभी एक-दूसरे की ओर देखने लगे। कुछ देर बाद महात्मा उसके पिता के पास गए और बोले, "यह तुम्हारा बेटा है, क्या तुम इसके लिए अपना जीवन नहीं दोगे?" पिता बोला, "महाराज, हमारे मरने से इसका जीना किस काम का? और कौन जाने यह उपाय सच हो या न हो।" महात्मा ने माँ से कहा, "माता, तुम तो स्नेह का सागर हो, क्या तुम नहीं चाहोगी कि तुम्हारा पुत्र जीवित हो?" माँ की आँखों में आँसू भर आए, पर उसने धीरे से कहा, "महाराज, हर आत्मा का अपना भाग्य होता है। हम भी बूढ़े हैं। हमारे मरने से यह युवक जीवित हो भी जाए, तो उसके जीवन में कौन स्थिरता होगी? विधाता ने जो लिखा है वही होगा।" महात्मा फिर उसकी पत्नी के पास गए, जो पास बैठी आँसू बहा रही थी। बोले, "बेटी, क्या तुम अपने पति के लिए अपना जीवन दोगी? क्या यही तुम्हारा सच्चा प्रेम नहीं?" पत्नी ने सिर झुका लिया, फिर बोली, "महाराज, इस संसार में हर किसी का अपना समय है। यदि मैं मर जाऊँ और ये जी जाएँ, तो कुछ समय बाद ये किसी और से विवाह कर लेंगे। मेरा बलिदान किसी काम का नहीं होगा। अच्छा यही है कि मैं अपने मायके लौट जाऊँ और अपना जीवन किसी और के साथ बिता दूँ।" महात्मा ने आस-पास बैठे रिश्तेदारों और मित्रों की ओर देखा, पर सभी चुप रहे। कोई आगे नहीं बढ़ा। अंत में महात्मा बोले, "यदि कोई नहीं पीता तो मैं यह दूध पी लेता हूँ।" यह सुनकर भीड़ में फुसफुसाहट होने लगी — "संत महात्मा का जीवन तो दूसरों के लिए ही होता है। इनका बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा।" महात्मा ने कटोरा उठाया, आँखें बंद कीं, और दूध पी लिया। फिर युवक के कान के पास झुककर बोले, "अब उठ बेटा, जाग जा अपने मोह से। देख लिया न, तेरे तथाकथित प्रेम का सच क्या है?" अचानक युवक ने आँखें खोलीं। उसने देखा कि पूरा घर अब भी मौन है, कोई आँसू नहीं, कोई पुकार नहीं। सबकी आँखों में अब एक अजीब-सी उदासीनता थी। उसने धीरे-धीरे उठकर महात्मा के चरणों में प्रणाम किया। महात्मा बोले, "वत्स, जो प्रेम आत्मा से जुड़ा हो, वही अमर होता है। बाकी सब दिखावे के रिश्ते हैं, जो सुविधा और स्वार्थ से बने हैं। अब तेरे भीतर का भ्रम टूट चुका है, अब चल, उस सत्य की खोज में जो कभी नहीं मरता।" युवक ने घर की ओर देखा — जहाँ कभी उसे बंधन दिखाई देता था, अब वहाँ केवल माया की डोर थी। उसने बिना पीछे देखे महात्मा का अनुसरण किया। वर्षों बीत गए। वह युवक अब एक प्रबुद्ध साधक बन चुका था। जो पहले झूठे प्रेम में उलझा हुआ था, अब वही आत्मा के शाश्वत प्रेम में विलीन था। उसका हृदय अब किसी व्यक्ति या वस्तु से नहीं, बल्कि परम सत्य से जुड़ा था — जो न जन्म लेता है, न मरता है।

शिक्षाः यह कथा हमें सिखाती है कि संसार का प्रेम अक्सर स्वार्थ और दिखावे से बंधा होता है। जो प्रेम आत्मा और सत्य से जुड़ा है, वही अमर है। अपने कर्तव्यों का पालन करें, लेकिन मोह में मत बंधें। आत्मोन्नति ही मनुष्य जीवन का परम उद्देश्य है — क्योंकि इस लोक के साथी केवल इस लोक तक ही साथ चलते हैं, पर आत्मा के साथ केवल आत्मज्ञान ही जाता है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

आइकॉनिक 'अटल ब्रिज' : गत तीन वर्षों में 77.71 लाख से अधिक लोगों ने की सैर, 27 करोड़ रुपए से अधिक की हुई आय

▸▸ अप्रैल 2025 से अक्टूबर 2025 के दौरान, केवल 7 महीने में ही 8.50 लाख से अधिक आगंतुक अटल ब्रिज को देखने पहुंचे

▸▸ अहमदाबाद के लोगों सहित देश और दुनिया के सैलानियों के लिए आकर्षण का केंद्र बना अटल फुट ओवर ब्रिज

(जीएनएस)। गांधीनगर : भारत की पहली हेरिटेज सिटी अहमदाबाद में साबरमती नदी पर बना आइकॉनिक 'अटल ब्रिज' आज अहमदाबाद के लोगों सहित देश और दुनिया के सैलानियों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया है। छुट्टियां चाहे दिवाली की हो या गर्मियों की, अटल फुटओवर ब्रिज लोगों की सैर का एक पसंदीदा गंतव्य बन गया है। बता दें कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 27 अगस्त, 2022 को अटल ब्रिज आम जनता के लिए खोला था। साबरमती रिवरफ्रंट डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एसआरएफडीसीएल) के ताजा आंकड़ों के मुताबिक 31 अगस्त, 2022 से अक्टूबर 2025 तक कुल 77,71,269 लोग अटल ब्रिज को देखने के लिए पहुंचे। इससे अहमदाबाद महानगर पालिका (एएमसी) को 27.70 करोड़ रुपए से अधिक की आय हुई है, जो अहमदाबाद के टूरिज्म क्षेत्र के लिए गौरव की बात है।

उल्लेखनीय है कि अहमदाबाद गुजरात का सबसे बड़ा और आधुनिक शहर है, जिसने आधुनिकीकरण के साथ-साथ अपनी गौरवशाली विरासत को भी संजोकर रखा है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में अहमदाबाद शहर में आने वाले पर्यटकों को एक अभूतपूर्व अनुभव प्रदान करने के लिए विभिन्न पर्यटन आकर्षण विकसित किए गए हैं। गांधी आश्रम, साबरमती रिवरफ्रंट, कांकरिया लेकफ्रंट, दुनिया का सबसे बड़ा नरेन्द्र मोदी स्टेडियम, अहमदाबाद की पुरानी पोळ संस्कृति और अहमदाबाद हेरिटेज वॉक आदि पर्यटन आकर्षणों को देखने के लिए लाखों पर्यटक अहमदाबाद की यात्रा करते हैं। इनमें, विशेष रूप से अटल फुट ओवर ब्रिज आधुनिक स्थापत्य, गुजराती संस्कृति और नगरीय सौंदर्य का जीवंत प्रतीक है।

अटल ब्रिज आने वाले आगंतुकों के वर्षवार आंकड़े

अटल ब्रिज का निर्माण साबरमती रिवरफ्रंट डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एसआरएफडीसीएल) द्वारा किया गया है, जो अहमदाबाद महानगर पालिका (एएमसी) के पूर्ण स्वामित्व वाली कंपनी है। एसआरएफडीसीएल द्वारा दिए गए वर्षवार आंकड़ों की बात करें, तो 31 अगस्त, 2022 से मार्च 2023 के दौरान 21.62 लाख पर्यटक अटल ब्रिज देखने के लिए पहुंचे थे, इससे 6.44 करोड़ रुपए की आय हुई। अप्रैल 2023 से मार्च 2024 के दौरान 26.89 लाख आगंतुकों से 8.24 करोड़ रुपए की आय तथा अप्रैल 2024 से मार्च 2025 के दौरान 20.67 लाख आगंतुकों से 8.19 करोड़ रुपए की आय हुई। वहीं, अप्रैल 2025 से अक्टूबर 2025 तक 8.51 लाख आगंतुक अटल ब्रिज घूमने आ चुके हैं, जिससे अहमदाबाद महानगर पालिका को 4.82 करोड़ रुपए की आय अर्जित हुई है।

इस आइकॉनिक अटल ब्रिज को लगभग 74 करोड़ रुपए की लागत से तैयार किया गया है। अब तक, अहमदाबाद महानगर पालिका को अटल ब्रिज से 27.70 करोड़ रुपए की आय हो चुकी है। इस प्रकार, अहमदाबाद महानगर पालिका ने अटल ब्रिज के निर्माण पर हुए कुल खर्च का 37 फीसदी से अधिक हिस्सा रिकवर कर लिया है।

सोना वायदा में 449 रुपये, चांदी वायदा में 1635 रुपये और क्रूड ऑयल वायदा में 99 रुपये की नरमी

कमोडिटी वायदाओं में 26661.36 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 83808.28 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवरः सोना-चांदी के वायदाओं में 21246.07 करोड़ रुपये का हुआ कारोबारः बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 28404 पॉइंट के स्तर पर

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस में 110471.37 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 26661.36 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 83808.28 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का नवंबर वायदा 28404 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 1600.02 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 21246.07 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना दिसंबर वायदा 120802 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 121135 रुपये और नीचे में 119801 रुपये पर पहुंचकर, 121409 रुपये के पिछले बंद के सामने 449 रुपये या 0.37 फीसदी गिरकर 120960 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा। गोल्ड-गिनी नवंबर वायदा 391 रुपये या 0.4 फीसदी गिरकर 97804 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल नवंबर वायदा 46 रुपये या 0.37 फीसदी गिरकर 12236 रुपये प्रति 1 ग्राम हुआ। सोना-मिनी नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 119613 रुपये के भाव पर खूलकर, 120070 रुपये के दिन के उच्च और 119182 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 145 रुपये या 0.12 फीसदी गिरकर 119985 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन नवंबर वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 121113 रुपये के भाव पर खूलकर, 121440 रुपये के दिन के उच्च और 120478 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 121646 रुपये के पिछले बंद के सामने 476 रुपये या 0.39 फीसदी गिरकर 121170 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। चांदी के वायदाओं में चांदी दिसंबर वायदा 146466 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 147230 रुपये और नीचे में 145262 रुपये पर पहुंचकर, 147758 रुपये के पिछले बंद के सामने 1635 रुपये या 1.11 फीसदी गिरकर 146123 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा चांदी-मिनी नवंबर वायदा 1847 रुपये या 1.23 फीसदी औंधकर 148303 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि चांदी-माइक्रो नवंबर वायदा 1834 रुपये या 1.22 फीसदी औंधकर 148293 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

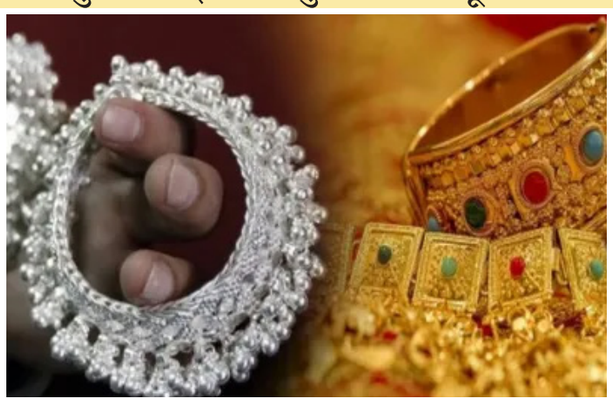

मेटल वर्ग में 2580.10 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा नवंबर वायदा 12.1 रुपये या 1.2 फीसदी गिरकर 997.1 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता नवंबर वायदा 95 पैसे या 0.31 फीसदी घटकर 303.5 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। इसके सामने एल्यूमीनियम नवंबर वायदा 1.75 रुपये या 0.64 फीसदी औंधकर 272.3 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा नवंबर वायदा 45 पैसे या 0.25 फीसदी टूटकर 182.9 रुपये प्रति किलो हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 2869.29 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 5398 रुपये के भाव पर खूलकर, 5412 रुपये के दिन के उच्च और 5331 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 99 रुपये या 1.82 फीसदी गिरकर 5348 रुपये प्रति बैरल हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी नवंबर वायदा 96 रुपये या 1.76 फीसदी गिरकर 5352 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस नवंबर वायदा 376.6 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 377.9 रुपये और नीचे में 371.9 रुपये पर पहुंचकर, 378.4 रुपये के पिछले बंद के सामने 4.8 रुपये या 1.27 फीसदी गिरकर 373.6 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर पहुंचा। जबकि नैचुरल गैस-मिनी नवंबर वायदा 4.6 रुपये या 1.22 फीसदी घटकर 373.7 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 938.9 रुपये के भाव पर खूलकर, 1.3 रुपये या 0.14 फीसदी की बढ़त के साथ 934 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 13197.41 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 8048.66 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 2001.67 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 169.48 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 22.66 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 385.73 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 631.95 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 2228.57 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 1.88 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। जबकि कॉटन केंडी के वायदाओं में 0.39 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 16545 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 54097 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 20862 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 314146 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 29888 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 28616 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 54274 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 151580 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 17585 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 26683 लोट के स्तर पर था। इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 28429 पॉइंट पर खूलकर, 28429 के उच्च और 28202 के नीचले स्तर को छूकर, 164 पॉइंट घटकर 28404 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल नवंबर 5400 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 46.9 रुपये की गिरावट के साथ 115.5 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस नवंबर 380 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.4 रुपये की गिरावट के साथ 18.25 रुपये हुआ।

सोना नवंबर 130000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 98.5 रुपये की गिरावट के साथ 482 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी नवंबर 160000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 538 रुपये की गिरावट के साथ 1245 रुपये हुआ। तांबा नवंबर 1000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 9.12 रुपये की गिरावट के साथ 16.19 रुपये हुआ। जस्ता नवंबर 305 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 32 पैसे की नरमी के साथ 4.65 रुपये हुआ। पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल नवंबर 5300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 37.8 रुपये की बढ़त के साथ 115.9 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस नवंबर 370 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 1.9 रुपये की बढ़त के साथ 19.05 रुपये हुआ।

सोना नवंबर 115000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 69.5 रुपये की बढ़त के साथ 750 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी नवंबर 140000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 241.5 रुपये की बढ़त के साथ 2334 रुपये हुआ। तांबा नवंबर 1000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 3.11 रुपये की बढ़त के साथ 19 रुपये हुआ। जस्ता नवंबर 300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1.3 रुपये की गिरावट के साथ 3.7 रुपये हुआ।

महाप्रबंधक पश्चिम रेलवे श्री विवेक कुमार गुप्ता ने अहमदाबाद मंडल में रेल परियोजनाओं एवं विकास कार्यों की समीक्षा बैठक की

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता ने मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, अहमदाबाद में अहमदाबाद मंडल पर चल रही विभिन्न रेल परियोजनाओं, निर्माण एवं पुनर्विकास कार्यों की प्रगति की विस्तृत समीक्षा बैठक की।

महाप्रबंधक ने इस दौरान अहमदाबाद, साबरमती और भुज स्टेशन पर चल रहे रि-डवलपमेंट कार्य की प्रगति, आदरज मोटी-विजापुर गेज परिवर्तन, साबरमती-असारवा Y कनेक्टिविटी, गांधीधाम-आदिपुर लाइन का चौहरिकरण, सामाख्याली–गांधीधाम चौहरिकरण, अहमदाबाद यार्ड रिमॉडलिंग वटवा-अहमदाबाद-साबरमती चौथी लाइन, नलिया-जखाऊ पोर्ट नई लाइन आदि परियोजना के कार्य की प्रगति की समीक्षा की।

बैठक में महाप्रबंधक श्री गुप्ता ने अहमदाबाद मंडल में चल रहे स्टेशन पुनर्विकास कार्यों, रोड ओवर ब्रिज (ROB), रोड अंडर ब्रिज (RUB), यात्री सुविधाओं के उन्नयन, सुरक्षा एवं परिचालन सुधार कार्यों की बिंदुवार समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों से प्रत्येक प्रोजेक्ट की वर्तमान स्थिति, पूर्णता का लक्ष्य, आने वाली तकनीकी या प्रशासनिक अड़चनों तथा समाधान की दिशा में उठाए जा रहे कदमों की जानकारी ली। यह भी निर्देश दिए कि सभी निर्माण कार्यों को निर्धारित समय-सीमा में गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण किया जाए, ताकि यात्रियों को बेहतर सुविधाएँ मिल सकें और परिचालन दक्षता में वृद्धि हो। उन्होंने यह भी कहा कि परियोजनाओं की मॉनिटरिंग नियमित रूप से की जाए तथा कार्यस्थल पर सुरक्षा मानकों का पालन सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ सुनिश्चित किया जाए।

बैठक के दौरान श्री गुप्ता ने अहमदाबाद मंडल के अंतर्गत गेज कन्वर्जन एवं नई रेल लाइन निर्माण परियोजनाओं की प्रगति पर भी विशेष ध्यान दिया। उन्होंने विस्तृत रूप से यह जाना कि किस सेक्शन में कितना कार्य पूरा हो चुका है, कितना कार्य शेष है और निर्धारित समय तक उसे पूरा करने की योजना क्या है।

पश्चिम रेलवे निरंतर यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा और संरचनात्मक विकास के क्षेत्र में नए मानक स्थापित कर रही है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि सभी अधिकारी मिलजुलकर निर्धारित लक्ष्यों को समय पर पूरा करेंगे।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण), मुख्य परियोजना प्रबंधक (निर्माण), मुख्य परियोजना प्रबंधक (RLDA) सहित मंडल के वरिष्ठ अधिकारी एवं मुख्यालय से आए प्रधान मुख्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

भरूच यार्ड में फुट ओवर ब्रिज डी-लॉन्चिंग हेतु ब्लॉक, कुछ ट्रेनें रेगुलेट की जाएंगी

(जीएनएस)। वडोदरा-सूरत स्टेशनों के बीच भरूच यार्ड में फुट ओवर ब्रिज (FOB) की डी-लॉन्चिंग हेतु बुधवार, 5 नवंबर, 2025 को 12:50 बजे से 15:50 बजे तक 3 घंटे का ब्लॉक लिया जाएगा। यह ब्लॉक अप एवं डाउन मेन लाइनों पर लिया जाएगा, जिसके कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें प्रभावित होंगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ब्लॉक के कारण प्रभावित होने वाली ट्रेनों का विवरण इस प्रकार हैः

05 नवंबर, 2025 को रेगुलेट की जाने वाली ट्रेनेंः

1. ट्रेन संख्या 12656 पुरट्च तलैवर डॉ. एम. जी. आर. चेन्नई सेंट्रल-अहमदाबाद एक्सप्रेस 01 घंटा 25 मिनट रेगुलेट होगी।
2. ट्रेन संख्या 09003 मुंबई सेंट्रल-शकूर बस्ती स्पेशल 01 घंटा 30 मिनट रेगुलेट होगी।
3. ट्रेन संख्या 09075 मुंबई सेंट्रल-काठगोदाम स्पेशल 55 मिनट रेगुलेट होगी।
4. ट्रेन संख्या 09095 बांद्रा टर्मिनस-अयोध्या कैंट स्पेशल 45 मिनट रेगुलेट होगी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बेमौसम बारिश से प्रभावित क्षेत्रों के दौरे के बाद गांधीनगर में उच्च स्तरीय बैठक कर स्थिति की समीक्षा की

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बेमौसम बारिश से प्रभावित जिलों का सोमवार को दौरा किया। उन्होंने प्रभावित गाँवों के किसानों से स्थिति की विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने सूरत तथा कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने भावनगर का दौरा कर किसानों की फसलों को हुए नुकसान का विवरण प्राप्त किया।

इन प्रत्यक्ष दौरों के बाद मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने मंगलवार को गांधीनगर में उच्च स्तरीय बैठक आयोजित समग्र स्थिति की समीक्षा की।

इस बैठक में कृषि राज्य मंत्री श्री रमेशभाई कटारा, मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, राजस्व विभाग की अपर मुख्य सचिव डॉ. जयंती रवि, कृषि विभाग की अपर मुख्य सचिव डॉ. अंजू शर्मा, वित्त विभाग के प्रधान सचिव डॉ. टी. नटराजन, मुख्यमंत्री की अपर प्रधान सचिव श्रीमती अवंतिका सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव डॉ. विक्रांत पांडे तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी सहभागी हुए।

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल पर पेंशन अदालत का आयोजन किया जाएगा

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल पर रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार सेवा निवृत्त कर्मचारियों के पेंशन संबन्धित प्रश्नों के त्वरित निपटारे के लिए 15 दिसंबर, 2025 (सोमवार) को पेंशन अदालत का आयोजन किया गया है।

अहमदाबाद मण्डल से जो भी कर्मचारी सेवानिवृत हुए है उन पेंशनर/फेमिली पेंशनर के पेंशन संबंधित शिकायतों के निवारण हेतु मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय अहमदाबाद में दिनांक 15.12.2025 (सोमवार) को पेंशन अदालत का आयोजन किया जा रहा है। अहमदाबाद मंडल से जो भी कर्मचारी रेल सेवा से सेवानिवृत्त हुए हैं वह पेंशनर/फैमिली पेंशनर अपनी पेंशन संबंधित शिकायतें है वह अपना आवेदन (तीन प्रतियों में) दिनांक 21.11.2025 तक मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय (स्थापना), अहमदाबाद मण्डल पश्चिम रेलवे, GCS हॉस्पिटल के सामने अमदुपुरा अहमदाबाद पिनकोडः382345 को भेज सकते हैं। आवेदन में अपना नाम, पदनाम, अंतिम वेतन, भर्ती तिथि, सेवानिवृत्ति की तिथि PPO प्रति एवं शिकायत का प्रकार अवश्य दर्ज करें।

अहमदाबाद में बुलेट ट्रेन स्टेशन निर्माण कार्य अंतिम चरण में 2029 तक पटरी पर दौड़ेगी भारत की पहली हाई-स्पीड रेल

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत की महत्वाकांक्षी हाई-स्पीड रेल परियोजना, जिसे आमतौर पर "बुलेट ट्रेन" कहा जाता है, अब अपने सबसे निर्णायक पड़ाव पर पहुंच चुकी है। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने अहमदाबाद रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास और मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल परियोजना की समीक्षा के बाद बताया कि अहमदाबाद में बुलेट ट्रेन स्टेशन का निर्माण कार्य अब अंतिम चरण में है। यह वही स्टेशन है जो देश की पहली बुलेट ट्रेन का प्रमुख ठिकाना बनने जा रहा है और जिसके जरिये भारत तेज़, आधुनिक और तकनीकी रूप से उन्नत रेल नेटवर्क के युग में कदम रखेगा।

रेल मंत्री ने जानकारी दी कि देशभर में इस समय 1,300 से अधिक रेलवे स्टेशन पुनर्विकास की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। इनमें अहमदाबाद स्टेशन सबसे महत्वपूर्ण परियोजनाओं में से एक है, जिसे आधुनिकता और ऐतिहासिक पहचान दोनों को संजोए हुए विकसित किया जा रहा है। पश्चिम रेलवे के अनुसार, अहमदाबाद के सारसपुर क्षेत्र में हाई-स्पीड रेल परियोजना का निर्माण तेजी से आगे बढ़ रहा है और अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल स्टेशन का ढांचा लगभग पूर्ण अवस्था में पहुंच गया है।

अश्विनी वैष्णव ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर जानकारी साझा करते हुए कहा, "अहमदाबाद स्टेशन का पुनर्विकास बेहद तेज़ी से हो रहा है। मल्टी-मोडल ट्रांसपोर्ट हब (एमएमटीएच) की दो बेसमेंट और चार मंज़िलों वाला स्ट्रक्चरल फ्रेम लगभग पूरा हो गया है। एलिवेटेड रोड के लिए 41 में से 38 पियर तैयार हो चुके हैं और 253 में से 154 गर्डर लॉन्च किए जा चुके हैं। बुलेट ट्रेन अहमदाबाद स्टेशन का निर्माण कार्य अपने अंतिम चरण में है।"

उन्होंने बताया कि अहमदाबाद स्टेशन को इस तरह से विकसित किया जा रहा है कि बुलेट ट्रेन और पारंपरिक रेलवे दोनों के लिए यह एकीकृत परिसर बन जाए। इस व्यवस्था से यात्रियों को बिना किसी असुविधा के एक ही स्थान से हाई-स्पीड और सामान्य रेल सेवाओं का उपयोग करने की सुविधा मिलेगी। इस पुनर्विकास के तहत स्टेशन में तीन नए प्लेटफॉर्म भी जोड़े जा रहे हैं, जिससे परिचालन क्षमता और यात्री संख्या दोनों में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

भारत की पहली बुलेट ट्रेन परियोजना 508 किलोमीटर लंबा मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर है। यह पूरी परियोजना जापान के सहयोग से तैयार की जा रही है और इसकी लागत लगभग 1.1 लाख करोड़ रुपये बताई जाती है। अनुमान है कि वर्ष 2029 तक यह परियोजना पूरी तरह संचालन के लिए तैयार हो जाएगी। हालांकि, गुजरात के सूरत और बिलिमोरा के बीच 50 किलोमीटर लंबे हिस्से को 2027 तक खोलने की योजना है, जिससे भारत में हाई-स्पीड ट्रेन का पहला परिचालन परीक्षण शुरू हो सके।

सितंबर में रेल मंत्री ने निर्माणाधीन सूरत स्टेशन का भी दौरा किया था, जहां उन्होंने ट्रैक बिछाने और पहला टर्नआउट लगाने की प्रक्रिया का निरीक्षण किया। उनके अनुसार, इस हाई-स्पीड रेल के शुरू होने के बाद मुंबई और अहमदाबाद के बीच की दूरी केवल दो घंटे सात मिनट में तय हो जाएगी, जबकि वर्तमान में यह दूरी सड़क मार्ग से लगभग नौ घंटे और रेल मार्ग से छह घंटे में तय होती है।

अश्विनी वैष्णव ने यह भी बताया कि इस परियोजना में अत्याधुनिक सुरक्षा तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है। ट्रैक के साथ कंपन अवशोषण प्रणाली, तेज़ हवाओं और भूकंप जैसे प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए विशेष सुरक्षा उपाय किए गए हैं। इसके अलावा, स्टेशन और ट्रेन दोनों में अत्याधुनिक सिग्नलिंग और नियंत्रण तकनीक का उपयोग किया जाएगा, जिससे न केवल यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित होगी बल्कि संचालन में भी अधिक दक्षता आएगी।

यह परियोजना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के "नए भारत" विजन का एक बड़ा प्रतीक मानी जा रही है। बुलेट ट्रेन के संचालन से भारत एशिया के उन देशों की श्रेणी में शामिल हो जाएगा, जिनके पास विश्वस्तरीय हाई-स्पीड रेल नेटवर्क है। यह परियोजना न केवल आर्थिक दृष्टि से बल्कि रोजगार, पर्यटन और क्षेत्रीय विकास के लिहाज से भी अहम मानी जा रही है।

रेल मंत्री ने यह भी संकेत दिया कि आने वाले वर्षों में देश के अन्य हिस्सों में चार और बुलेट ट्रेन कॉरिडोर स्थापित करने की योजना है। इन कॉरिडोरों का उद्देश्य भारत को एकीकृत हाई-स्पीड रेल नेटवर्क से जोड़ना है, जिससे दिल्ली, वाराणसी, चेन्नई, बेंगलुरु, हैदराबाद और कोलकाता जैसे महानगरों को भी आधुनिक परिवहन प्रणाली से लाभ मिल सके। अहमदाबाद स्टेशन के पुनर्विकास और बुलेट ट्रेन परियोजना का समापन भारत की रेलवे यात्रा का एक ऐतिहासिक अध्याय होगा। यह सिर्फ एक तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि देश की प्रगति, नवाचार और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनेगा — जहां विकास की पटरी पर भारत अब "स्पीड" से नहीं, बल्कि "सुपरस्पीड" से दौड़ेगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल मोरबी में दादा भगवान के 118वें जयंती महोत्सव में सहभागी हुए

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने महोत्सव के दूसरे दिन सीमंधर स्वामी और दादा भगवान की आरती उतारी और सभी के कल्याण की कामना की

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल मंगलवार को मोरबी में आयोजित पूज्य दादा भगवान के 118वें जयंती महोत्सव में सहभागी हुए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने सत्संग-प्रार्थना में उपस्थित रहकर आत्मज्ञानी श्री दीपकभाई द्वारा दिए गए आत्मज्ञान के प्रवचन का श्रवण किया।

मुख्यमंत्री और श्री दीपकभाई ने इस अवसर पर सीमंधर स्वामी और दादा भगवान की पूजा-अर्चना की और आरती उतारकर सभी के कल्याण की कामना की।

उल्लेखनीय है कि मोरबी में आगामी 09 नवंबर तक दादा भगवान के 118वें जयंती महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया है। इस महोत्सव का शुभारंभ 03 नवंबर को हुआ था। इस आयोजन के दूसरे दिन, मंगलवार को मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की गरिमामयी उपस्थिति में सत्संग का आयोजन किया गया।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर पूजा, आरती और दर्शन का लाभ लिया और समग्र जगत के जीवमात्र के कल्याण की कामना की। उन्होंने प्रार्थना की कि प्रत्येक को सच्चे सुख की प्राप्ति हो।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने आत्मज्ञानी श्री दीपकभाई को माला पहनाकर उनका आशीर्वाद लिया। श्री दीपकभाई ने मुख्यमंत्री को दादा भगवान के जीवन पर आधारित पुस्तक 'ज्ञानी पुरुष, भाग-6' भेंट की। आत्मज्ञानी श्री दीपकभाई ने इस सत्संग में बिना आत्मा का शरीर, कर्म, कर्ता का भाव, दुनिया के दुखों से मुक्ति, शुद्ध आत्मा, मानव और आधुनिक टेक्नोलॉजी से लैस आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) तथा प्रत्येक क्षण में जागृति की भावना के विकसित होने जैसी ज्ञान की प्रेरक बातें कहीं।

इस अवसर पर श्रम, रोजगार और कौशल विकास राज्य मंत्री श्री कांतिभाई अमृतिया, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती हंसाबेन पारेघी, राज्य सभा सांसद श्री केसरीदेव सिंह झाला, विधायक श्री दुर्लभजीभाई देथरिया, मेघजीभाई चावड़ा, पूर्व मंत्री श्री ब्रिजेशभाई मेरजा, पूर्व सांसद श्री मोहनभाई कुंडारिया, जिला कलेक्टर श्री के.बी. झवेरी, मोरबी महानगर पालिका आयुक्त श्री स्वप्निल खरे, जिला पुलिस अधीक्षक श्री मुकेश पटेल, अग्रणी श्री जयंतीभाई राजकोटिया, श्री दादा भगवान के अनुयायी और मोरबीवासी विशाल संख्या में उपस्थित रहे।

जोहरान ममदानी ने रचा इतिहास, बने न्यूयॉर्क सिटी के पहले भारतीय-अमेरिकी मुस्लिम मेयर

(जीएनएस)। नई दिल्ली। अमेरिका के सबसे प्रतिष्ठित नगरों में से एक न्यूयॉर्क सिटी में इतिहास रच गया है। भारतीय मूल के मुस्लिम डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट जोहरान ममदानी ने मेयर चुनाव में शानदार जीत दर्ज की है, जिससे वे इस शहर के पहले भारतीय-अमेरिकी मुस्लिम मेयर बन गए हैं। यह जीत केवल एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि अमेरिका की राजनीति में बदलते सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य की गूंज भी है।

जोहरान ममदानी ने अपने प्रतिद्वंदी और पूर्व गवर्नर एंड्रयू कुओमो को कड़ी टक्कर में हराया। कुओमो, जो कभी डेमोक्रेटिक पार्टी के सबसे प्रभावशाली चेहरों में से एक रहे हैं, इस बार स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में मैदान में उतरे थे और उन्हें डोनाल्ड ट्रंप का समर्थन भी प्राप्त था। हालांकि, ममदानी की प्रगतिशील नीतियों, सामाजिक न्याय पर आधारित एजेंडे और युवाओं में बढ़ते जनसमर्थन ने उन्हें निर्णायक जीत दिलाई।

चुनाव परिणामों के अनुसार, जोहरान ममदानी ने कुल 9,48,202 वोट (50.6%) हासिल किए, जबकि कुओमो को 7,76,547 वोट (41.3%) मिले। रिपब्लिकन उम्मीदवार कर्टिस स्लिवा को मात्र 1,37,030 वोट प्राप्त हुए। न्यूयॉर्क सिटी इलेक्शन बोर्ड के मुताबिक इस बार 1969 के बाद सर्वाधिक वोटिंग हुई, जिसमें करीब दो मिलियन लोगों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

मैनहट्टन में सबसे अधिक मतदान हुआ, जहां 4,44,439 वोट डाले गए। इसके बाद ब्रुकलिन में 5,71,857, क्वींस में 4,21,176, ब्रोंक्स में 1,87,399, और स्टेटन आइलैंड में 1,23,827 वोट पड़े। यह स्पष्ट है कि ममदानी को शहर के हर कोने से व्यापक जनसमर्थन मिला।

जोहरान ममदानी का यह राजनीतिक सफर बेहद प्रेरणादायक है। उनके पिता भारतीय अर्थशास्त्री और लेखक रहे हैं, जबकि माता उगांडा मूल की मानवाधिकार कार्यकर्ता हैं। ममदानी का जन्म युगांडा में हुआ और वे बचपन में अपने परिवार के साथ अमेरिका आ गए। उन्होंने न्यूयॉर्क के क्वींस इलाके में परवरिश पाई और वहीं से उन्होंने समाजसेवा की शुरुआत की। गरीब तबकों, आप्रवासी मजदूरों और आवास संकट से जूझ रहे परिवारों के लिए काम करने के कारण वे लोगों के बीच लोकप्रिय हो गए।

चुनाव प्रचार के दौरान ममदानी ने बेरोजगारी, आवास, शिक्षा और सामाजिक समानता को अपने अभियान का मुख्य आधार बनाया। उन्होंने कहा था, "न्यूयॉर्क सिटी को फिर से उन लोगों का शहर बनाना है, जो यहां मेहनत करते हैं, न कि सिर्फ उन लोगों का जो यहां

निवेश करते हैं।" उनकी इस जनवादी सोच ने उन्हें युवाओं, श्रमिक वर्ग और आप्रवासी समुदायों का अपार समर्थन दिलाया।

दूसरी ओर, पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ममदानी की उम्मीदवारी का विरोध किया था। उन्होंने अपने सोशल मीडिया मंच "ट्रुथ सोशल" पर पोस्ट करते हुए चेतावनी दी थी कि अगर ममदानी जीतते हैं, तो न्यूयॉर्क शहर "आर्थिक और सामाजिक आपदा" का सामना करेगा। उन्होंने यहां तक कहा था कि वे "न्यूयॉर्क को फेडरल फंड देना बंद कर देंगे" यदि ममदानी मेयर बनते हैं।

लेकिन न्यूयॉर्क के मतदाताओं ने ट्रंप की इस अपील को पूरी तरह नकार दिया और अपने वोट से यह साबित किया कि वे समानता और प्रगतिशीलता की दिशा में आगे बढ़ना चाहते हैं।

जोहरान ममदानी की यह जीत न केवल भारतीय मूल के लोगों के लिए गौरव का क्षण है, बल्कि यह संदेश भी देती है कि अमेरिका की राजनीति में अब विविधता और प्रतिनिधित्व की आवाज़ बुलंद हो रही है।

उन्होंने अपने पहले संबोधन में कहा, "मैं इस शहर का मेयर सिर्फ एक समुदाय के लिए नहीं, बल्कि हर नागरिक के लिए हूं। यह जीत हमारी साझा पहचान और आशा की जीत है।"

वहीं दूसरी तरफ, अमेरिका के अन्य राज्यों में भी डेमोक्रेटिक पार्टी को बड़ी सफलता मिली है। वर्जीनिया में अबीगेल स्पैनबर्गर ने राज्य की पहली महिला गवर्नर बनकर इतिहास रचा, जबकि गजाला हाशमी लेफ्टिनेंट गवर्नर बनीं। न्यू जर्सी में मिकी शेरिल ने रिपब्लिकन गवर्नर ग्लेन यंगकिन को पराजित किया।

इन चुनावी नतीजों से यह स्पष्ट है कि अमेरिका की राजनीति में एक नई पीढ़ी और नई सोच का उदय हो रहा है — जो रंग, धर्म या मूल के बजाय समान अवसरों, सामाजिक न्याय और मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता देती है।

जोहरान ममदानी की जीत न सिर्फ भारतीय समुदाय बल्कि दुनिया भर में बसे उन लाखों आप्रवासियों के लिए एक प्रेरणा है, जो यह मानते हैं कि मेहनत और ईमानदारी से वे किसी भी व्यवस्था में अपना स्थान बना सकते हैं। न्यूयॉर्क की गगनचुंबी इमारतों के बीच अब एक नया नाम गूंज रहा है — मेयर जोहरान ममदानी — जो इतिहास के पन्नों में हमेशा याद रखा जाएगा।

चीन-पाकिस्तान की नौसैनिक साझेदारी से बढ़ी भारत की समुद्री चिंता, हंगोर-क्लास पनडुब्बी सौदे ने मचाई हलचल

(जीएनएस)। नई दिल्ली। हिंद महासागर और अरब सागर क्षेत्र में शक्ति संतुलन को लेकर भारत के रणनीतिक हलकों में चिंता गहराती जा रही है। चीन और पाकिस्तान के बीच हाल ही में हुई नौसैनिक साझेदारी की प्रगति ने न केवल क्षेत्रीय सुरक्षा समीकरणों को बदलने की दिशा में कदम बढ़ाया है, बल्कि यह भारत के लिए नई रणनीतिक चुनौती भी लेकर आई है। चीन ने पाकिस्तान को अपनी अत्याधुनिक हंगोर-क्लास पनडुब्बियां (Hangor-class submarines) देने की प्रक्रिया शुरू कर दी है, जिससे अरब सागर में पाकिस्तानी नौसेना की क्षमता कई गुना बढ़ जाएगी।

2015 में दोनों देशों के बीच हुई ऐतिहासिक रक्षा डील के तहत पाकिस्तान ने चीन से आठ हंगोर-क्लास पनडुब्बियों की खरीद पर हस्ताक्षर किए थे। इस समझौते के तहत चार पनडुब्बियां चीन में निर्मित की जा रही हैं, जबकि बाकी चार पाकिस्तान में असेंबल की जाएंगी। पाकिस्तान नौसेना प्रमुख एडमिरल नवेद अशरफ ने हाल ही में खुलासा किया कि इस परियोजना की रफ्तार उम्मीद से ज्यादा तेज है और 2026 तक यह योजना पूरी तरह मूर्त रूप ले लेगी।

चीनी अखबार ग्लोबल टाइम्स के मुताबिक, चीन में दूसरी और तीसरी पनडुब्बी के लॉन्च के साथ यह साझेदारी एक नए चरण में प्रवेश कर चुकी है। पाकिस्तान नौसेना प्रमुख के अनुसार, यह परियोजना न केवल पाकिस्तान की "अंडरवाटर वॉरफेयर

कैपेबिलिटी" को मजबूत करेगी बल्कि कराची शिपयार्ड एंड इंजीनियरिंग वर्क्स में स्थानीय स्तर पर तकनीकी विशेषज्ञता भी विकसित करेगी। इससे पाकिस्तान भविष्य में स्वदेशी पनडुब्बियों का उत्पादन करने की दिशा में कदम बढ़ा सकेगा।

इन हंगोर-क्लास पनडुब्बियों को अत्याधुनिक सोनार, टॉरपीडो और एयर-इंडिपेंडेंट प्रपल्शन (AIP) तकनीक से लैस बताया जा रहा है, जो इन्हें लंबे समय तक पानी के भीतर रहने और दुश्मन के रडार से बचने में सक्षम बनाती है। ये पनडुब्बियां पाकिस्तान की समुद्री सीमा में भारत के नौसैनिक दबदबे को चुनौती देने में अहम भूमिका निभा सकती हैं।

भारत के पास वर्तमान में फ्रांस निर्मित स्कॉर्पीन-क्लास की अत्याधुनिक पनडुब्बियां हैं — INS Kalvari (S21), INS Khanderi (S22), INS Karanj (S23) और INS Vela (S24) — जो तकनीकी रूप से पाकिस्तान की नई पनडुब्बियों से आगे मानी जाती हैं। लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि चीन द्वारा पाकिस्तान को आधुनिक पनडुब्बियां और मिसाइल तकनीक देने से भारत को भविष्य में समुद्री निगरानी, सामरिक संतुलन और नौसैनिक तैनाती रणनीतियों पर पुनर्विचार करना पड़ सकता है।

इस सौदे के साथ ही चीन ने पाकिस्तान को टाइप 054A/P फ्रिगेट्स भी दिए हैं, जो बहु-उद्देशीय युद्धपोत हैं। ये फ्रिगेट्स मिसाइल डिफेंस, एंटी-सबमरीन वारफेयर और सरफेस कॉम्बैट ऑपरेशंस जैसे कई मिशनों में काम आ सकते हैं। पाकिस्तान नौसेना ने इन्हें अपनी परिचालन क्षमता में बड़ा इज़ाफा बताया है।

रणनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि चीन और पाकिस्तान की यह साझेदारी "दो-फ्रंट" सुरक्षा परिदृश्य को और जटिल बना रही है। भारत को अब न केवल चीन की हिंद महासागर में बढ़ती उपस्थिति पर नज़र रखनी होगी, बल्कि पाकिस्तान के नौसैनिक अड्डों — खासकर ग्वादर पोर्ट, जिसे चीन ने विकसित किया है — के माध्यम से बढ़ रहे सामरिक खतरे का भी सामना करना होगा।

रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार, यह साझेदारी महज एक पनडुब्बी सौदा नहीं बल्कि एक दीर्घकालिक स्ट्रैटेजिक एलायंस है, जो भारत की समुद्री सुरक्षा नीति के केंद्र में नई चुनौतियाँ पैदा कर सकता है। आने वाले वर्षों में जब ये सभी आठ पनडुब्बियां सक्रिय सेवा में आ जाएंगी, तब पाकिस्तान के पास अरब सागर में एक ऐसा नौसैनिक बेड़ा होगा, जो चीन की तकनीकी छाया में भारत की समुद्री सीमाओं पर निरंतर दबाव बनाए रख सकेगा।

UP का सबसे खतरनाक AK-47 गैंग बेनकाब: टैटू ने कराई पहचान, तीन सदस्य गिरफ्तार — 21 आरोपी अब तक पकड़े गए, सात नाबालिग भी शामिल

(जीएनएस)। गोरखपुर। पूर्वी उत्तर प्रदेश में आतंक मचाने वाले कुख्यात "AK-47 गैंग" के तीन और सक्रिय सदस्य आखिरकार पुलिस के शिकंजे में आ गए। यह वही गैंग है जो कुछ दिन पहले हुए अकटहवा पुल गैंगवार कांड में शामिल था। पुलिस ने मंगलवार को पीपीगंज थाना क्षेत्र से तीन बदमाशों को गिरफ्तार किया, जिनके हाथों पर 'AK-47' का टैटू बना था — यही टैटू उनके अपराधी नेटवर्क में पहचान और वफादारी का प्रतीक था।

हथियारों के टैटू बने पहचान का सबूत

एसपी उत्तरी जितेंद्र कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि पुलिस टीम ने मंगलवार दोपहर में छापेमारी कर महराजगंज जिले के डोमरा गांव निवासी सन्नी कन्नौजिया, मोहद्दीनपुर के सचिन यादव और गोरखपुर जिले के बलुआ गांव निवासी बालकिशुन को गिरफ्तार किया। तीनों के हाथों पर 'AK-47' राइफल की आकृति का टैटू पाया गया, जो इस गैंग की पहचान का अहम निशान है। यह टैटू न केवल उनके आपराधिक गठबंधन का प्रमाण है, बल्कि गैंग के भीतर वफादारी की शपथ का प्रतीक भी माना जाता है।

अकटहवा पुल गैंगवार की जड़ में पुरानी दुश्मनी

27 अक्टूबर की दोपहर करीब 12:50 बजे, अकटहवा पुल पर दो प्रतिद्वंद्वी गिरोहों — 'AK-47 गैंग' और 'रेड गैंग' — के बीच खूनी संघर्ष छिड़ गया था। दोनों ओर से लाठी-डंडों, ईंट-पत्थरों और हथियारों से हमला हुआ, जिससे इलाके में भगदड़ मच गई थी। पुल के दोनों छोरों पर दहशत का माहौल बन गया और लोगों ने किसी तरह अपनी जान बचाई।

इस संघर्ष की जड़ पुरानी आपसी रंजिश बताई जा रही है, जिसमें दोनों गिरोह इलाके पर वर्चस्व कायम करना चाहते थे। पुलिस के अनुसार, अब तक इस मामले में 21 आरोपितों की गिरफ्तारी हो चुकी है, जिनमें सात नाबालिग भी शामिल हैं। बाकी फरार आरोपियों की तलाश में गोरखपुर और महराजगंज पुलिस की संयुक्त टीमें लगातार छापेमारी कर रही हैं।

गैंग की 'शपथ रस्म' का खुलासा — टैटू बनवाने से पहले ली जाती थी निष्ठा परीक्षा

पुलिस जांच में सनसनीखेज खुलासा हुआ है कि AK-47 गैंग में शामिल होने वाला हर नया सदस्य पहले एक 'रहस्यमय रस्म' से गुजरता था। इस दौरान उसे गिरोह के वरिष्ठ सदस्यों के सामने बुलाया जाता था, जहां उसे गैंग के प्रति वफादारी की शपथ दिलाई जाती थी — कि वह कभी पुलिस या किसी बाहरी व्यक्ति को संगठन की गतिविधियों के बारे में नहीं बताएगा। इसके बाद उसकी निष्ठा की परीक्षा होती थी — अचानक बुलावा भेजा जाता था और देखा जाता था कि वह कितनी जल्दी पहुंचता है या किसी 'काम' के दौरान डरकर पीछे तो नहीं हटता। जो इन परीक्षाओं में सफल होता था, उसे गैंग का स्थायी सदस्य घोषित कर उसके हाथ पर "AK-47" का टैटू गोद दिया जाता था। यही टैटू गैंग में "सम्मान" और "वफादारी" का प्रतीक बन जाता था।

'रेड गैंग' की पहचान लाल बाल — दो गैंगों की पहचान से फैली थी दहशत

पुलिस जांच में यह भी सामने आया है कि अकटहवा पुल कांड में शामिल दूसरा गिरोह 'रेड गैंग' था, जिसके सदस्य अपने बाल लाल रंग में रंगते थे। यह उनका पहचान चिह्न था, जिससे वे विरोधियों और पुलिस दोनों को यह दिखाते थे कि वे 'रेड गैंग' का हिस्सा हैं। दोनों गिरोहों की ये प्रतीकात्मक पहचानें इलाके में आतंक और खौफ का माहौल बनाए रखती थीं।

पुलिस ने अभियान तेज किया, इलाके में बढ़ी चौकसी

थानाध्यक्ष पीपीगंज अरुण कुमार सिंह ने बताया कि दोनों गैंग के आतंक को खत्म करने के लिए पुलिस ने सघन अभियान शुरू कर दिया है। लगातार छापेमारी चल रही है और गांव-गांव में संदिग्ध युवकों की तलाशी ली जा रही है। पुलिस टीम साइबर तकनीक की मदद से भी फरार आरोपियों की लोकेशन ट्रैक कर रही है।

बंगाल में अवैध रूप से रह रहा बांग्लादेशी ब्लॉगर गिरफ्तार, फर्जी पहचान बनाकर कल्याणी में छिपा था

(जीएनएस)। कोलकाता। पश्चिम बंगाल पुलिस ने एक बांग्लादेशी उदारवादी ब्लॉगर को अवैध रूप से भारत में रह रहे होने के आरोप में गिरफ्तार किया है। यह कार्रवाई रानाघाट पुलिस ज़िले के कल्याणी थाने की टीम ने एक हफ्ते तक चली गुप्त जांच के बाद की। गिरफ्तार व्यक्ति की पहचान बांग्लादेश के पिरोजपुर जिले के नज़ीरपुर निवासी मुफ़्ती अब्दुल्ला हाफ़िज़ अल मसूद (पुत्र महाबुर रहमान) के रूप में हुई है। पुलिस को खुफिया सूत्रों से सूचना मिली थी कि वह लंबे समय से कल्याणी क्षेत्र में फर्जी पहचान के सहारे रह रहा है और अपने वास्तविक नागरिकता संबंधी तथ्यों को छिपा रहा है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, कल्याणी के गोकुलपुर इलाके में एक किराए के मकान में छिपे मसूद को पुलिस ने मंगलवार को गिरफ्तार किया। पूछताछ में उसने पहले दावा किया कि उसके पास वैध पासपोर्ट और वीज़ा है, लेकिन जब अधिकारियों ने दस्तावेजों की जांच की, तो यह स्पष्ट हो गया कि पासपोर्ट और वीज़ा दोनों की वैधता 2020 में ही समाप्त हो चुकी थी। इस खुलासे के बाद उसे विदेशी अधिनियम की धाराओं के तहत गिरफ्तार कर अदालत

में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

पुलिस अधीक्षक आशीष मौर्य ने बताया कि मसूद 2017 में वैध पासपोर्ट और वीज़ा पर भारत आया था। उसका वीज़ा 2020 में समाप्त हो गया, इसके बावजूद वह बिना अनुमति देश में रह रहा था। 2024 में उसने पासपोर्ट तो नवीनीकृत करा लिया, लेकिन नया वीज़ा या निवास अनुमति लेने का कोई प्रयास नहीं किया। अप्रैल 2025 में वह कल्याणी आकर बस गया था और स्थानीय लोगों के बीच अपनी पहचान "अब्दुल हसन" के नाम से बना ली थी।

जांच में यह भी सामने आया है कि वह इंटरनेट पर एक ब्लॉगर के रूप में सक्रिय था और बांग्लादेश में उसे अपने "उदारवादी विचारों" के कारण धमकियां मिल रही थीं। उसने वहां से भागकर भारत में शरण ली थी, लेकिन किसी प्रकार की आधिकारिक अनुमति या शरणार्थी दर्जा नहीं प्राप्त किया।

पुलिस के अनुसार, मसूद ने अपने ठिकाने को बदलते हुए कई महीनों तक नदिया, मुर्शिदाबाद और मालदा जिलों में ठहराव किया था। वह स्थानीय प्रशासन की नजर से बचने के लिए फर्जी आधार कार्ड और मोबाइल सिम का इस्तेमाल कर रहा था। जांच एजेंसियों को संदेह है कि उसने सोशल मीडिया के माध्यम से कुछ संवेदनशील विषयों पर लेख भी लिखे हैं, जिनमें भारत और बांग्लादेश की सरकारों से जुड़े मुद्दे शामिल हैं।

सूत्रों के अनुसार, यह गिरफ्तारी राष्ट्रीय सुरक्षा दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण मानी जा रही है, क्योंकि पिछले कुछ महीनों में बंगाल के सीमावर्ती इलाकों में कई विदेशी नागरिक बिना वैध दस्तावेजों के पाए गए हैं। पुलिस और केंद्रीय एजेंसियां अब उसके संपर्कों और ऑनलाइन गतिविधियों की गहन जांच कर रही हैं।

स्थानीय निवासियों के मुताबिक, मसूद एक शांत स्वभाव का व्यक्ति दिखाई देता था और कभी-कभी बच्चों को अंग्रेजी व कंप्यूटर सिखाने का काम भी करता था। किसी को अंदाजा नहीं था कि वह सीमा पार से भागकर आया व्यक्ति है।

अधिकारियों ने बताया कि मामले की गंभीरता को देखते हुए उसे केंद्रीय एजेंसियों के हवाले किए जाने की संभावना है। उसके इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, लैपटॉप और मोबाइल फोन जब्त कर लिए गए हैं, जिनकी फॉरेंसिक जांच जारी है।

प्रेमप्रसंग में पिता बना जल्लाद, डंडों से पीट-पीटकर बेटी की हत्या, आरोपी फरार

(जीएनएस)। शाहजहांपुर। उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले में मंगलवार को एक दिल दहला देने वाली वारदात सामने आई, जहां एक पिता ने अपनी ही बेटी को मौत के घाट उतार दिया। बताया जा रहा है कि युवती एक युवक से प्रेम करती थी, जिसे लेकर परिवार में लगातार तनाव बना हुआ था। मंगलवार को जब पिता ने बेटी को फिर उसी युवक से बात करते देखा, तो उसका गुस्सा बेकाबू हो गया। उसने डंडा उठाकर अपनी ही 18 वर्षीय बेटी को बेरहमी से पीट-पीटकर मार डाला। वारदात के बाद आरोपी पिता फरार हो गया, जबकि पूरे गांव में सनसनी फैल गई।

रोजा थाना क्षेत्र के सुतनेरा गांव में हुई इस दर्दनाक घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। थाना प्रभारी निरीक्षक राजीव कुमार ने बताया कि मृतका की उम्र करीब 18 वर्ष थी और वह अपने घर के अंदर ही पिता के हाथों मारी गई। पिता ने कई बार बेटी को समझाने की कोशिश की थी कि वह उस युवक से संबंध न रखे, लेकिन जब उसने बार-बार चेतावनी के बावजूद बात करना नहीं छोड़ा, तो उसने आपा खो दिया। स्थानीय लोगों के अनुसार, पिता बेटी के प्रेम संबंध से बेहद नाराज़ था। कई बार उसने मोहल्ले और रिश्तेदारों के सामने भी बेटी को डांटा था। मंगलवार दोपहर जब वह फिर मोबाइल पर बात करते हुए पकड़ी गई, तो पिता ने बिना कुछ सोचे-समझे डंडे से ताबड़तोड़ वार शुरू कर दिए। घर में मौजूद परिवार के अन्य सदस्य चीखते-चिल्लाते रहे, मगर तब तक युवती ने दम तोड़ दिया। घटना की सूचना पाकर पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी भी मौके पर पहुंचे। उन्होंने बताया कि आरोपी पिता वारदात के बाद फरार हो गया है, जिसकी तलाश में पुलिस टीमों को भेजा गया है।

झांसी रेल मंडल ने अक्टूबर में बनाया माल ढुलाई और राजस्व वृद्धि का नया इतिहास

(जीएनएस)। झांसी। उत्तर मध्य रेलवे के झांसी रेल मंडल ने अक्टूबर 2025 में माल ढुलाई और राजस्व अर्जन के क्षेत्र में ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। मंडल ने जहां निर्धारित लक्ष्य से अधिक माल की ढुलाई की, वहीं राजस्व के मामले में भी उल्लेखनीय बढ़त दर्ज की। यह उपलब्धि भारतीय रेल के लिए न केवल एक उत्साहजनक संकेत है, बल्कि मंडल के कर्मचारियों और अधिकारियों की सामूहिक प्रतिबद्धता, दक्षता और नवाचार का भी प्रमाण है।

रेलवे के आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, अक्टूबर 2025 के दौरान झांसी रेल मंडल ने 4.97 मिलियन टन के लक्ष्य के मुकाबले 5.22 मिलियन टन माल की ढुलाई कर 5.03 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। इसी अवधि में माल परिवहन से प्राप्त राजस्व 502.77 करोड़ रुपये के लक्ष्य के मुकाबले 544.47 करोड़ रुपये तक पहुंच गया, जो 8.29 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्शाता है। यह प्रदर्शन भारतीय रेलवे के वार्षिक लक्ष्यों को साकार करने की दिशा में झांसी मंडल की अग्रणी भूमिका को रेखांकित करता है।

मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) अनिरुद्ध कुमार ने इस सफलता को पूरी टीम की मेहनत, समर्पण और पारदर्शी कार्यशैली का परिणाम बताया। उन्होंने कहा कि "यह उपलब्धि हमारे कर्मचारियों की कड़ी मेहनत, निरंतर निगरानी और माल ग्राहकों के विश्वास का नतीजा है। रेलवे प्रशासन इस उपलब्धि को भविष्य के लिए एक प्रेरणा मानता है और हम इसी गति से आगे भी अपनी सेवाओं की गुणवत्ता और दायरा बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।" उन्होंने यह भी बताया कि मंडल ने इस वित्तीय वर्ष में माल ढुलाई के लिए आधुनिक उपकरणों, डिजिटलीकृत ट्रैकिंग सिस्टम और स्वचालित प्रक्रियाओं को अपनाया है, जिससे माल गाड़ियों की टर्नअराउंड टाइम (यात्रा पूरी करने का औसत समय) में उल्लेखनीय कमी आई है। इसके अलावा, मंडल ने माल परिवहन के नए गंतव्यों को जोड़ने और औद्योगिक इकाइयों के साथ समन्वय को भी प्राथमिकता दी है, जिससे लोडिंग के अवसरों में विस्तार हुआ है। रेलवे सूत्रों के अनुसार, झांसी मंडल की इस सफलता के पीछे कोयला, सीमेंट, खाद, पेट्रोलियम उत्पादों और कृषि सामग्री के लदान में हुई बढ़ोतरी का बड़ा योगदान है। विशेष रूप से औद्योगिक क्षेत्र में बढ़ती रेल निर्भरता और प्रतिस्पर्धात्मक भाड़ा नीति के कारण रेल परिवहन को सड़क परिवहन पर बढ़त मिली है। मंडल रेल प्रबंधक ने आगे कहा कि "अक्टूबर माह की इस उपलब्धि ने यह साबित कर दिया है कि झांसी मंडल न केवल अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम है, बल्कि उन्हें पार करने की क्षमता भी रखता है। यह हमारी समर्पित कार्यशैली और सामूहिक भावना का प्रमाण है।" उन्होंने सभी विभागों— ऑपरेशन, ट्रैफिक, इंजीनियरिंग, यांत्रिक, विद्युत और सिग्नल शाखा के कर्मचारियों को इस सफलता में योगदान के लिए धन्यवाद दिया। रेलवे अधिकारियों का मानना है कि इस वित्तीय वर्ष के शेष महीनों में भी झांसी मंडल अपनी इस सकारात्मक प्रगति को बनाए रखेगा और भारतीय रेलवे के समग्र माल ढुलाई प्रदर्शन में अग्रणी योगदान देगा। इस प्रदर्शन से न केवल रेलवे की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी, बल्कि यात्रियों को दी जाने वाली सेवाओं के आधुनिकीकरण और बुनियादी ढांचे के विस्तार में भी तेजी आएगी। झांसी रेल मंडल की यह उपलब्धि भारतीय रेलवे के उस नए युग की झलक है, जिसमें दक्षता, पारदर्शिता और तकनीकी नवाचार मिलकर रेल परिवहन को देश के विकास की रीढ़ के रूप में और अधिक सशक्त बना रहे हैं।

फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस में भी शुरू होगा प्री ओपन सेशन, 8 दिसंबर से लागू होगी नई व्यवस्था

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारतीय शेयर बाजार में अब एक बड़ा बदलाव होने जा रहा है। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) ने घोषणा की है कि इक्विटी फ्यूचर एंड ऑप्शंस (एफएंडओ) सेगमेंट में भी अब प्री ओपन सेशन की सुविधा शुरू की जाएगी। यह नई व्यवस्था 8 दिसंबर से लागू होगी। अब ट्रेडर्स और निवेशकों को रेगुलर मार्केट खुलने से पहले ही स्टॉक फ्यूचर्स और इंडेक्स की शुरुआती चाल का अंदाजा लगाने का अवसर मिलेगा।

एनएसई की ओर से बताया गया है कि यह कदम डेरिवेटिव मार्केट में भी स्थिरता (स्टेबिलिटी) सुनिश्चित करने और वॉलाटिलिटी कम करने के लिए उठाया गया है। ठीक उसी तरह जैसे इक्विटी कैश मार्केट में पहले से ही प्री ओपन सेशन की व्यवस्था मौजूद है, वैसे ही फ्यूचर्स और ऑप्शंस में भी 15 मिनट की एक विंडो तय की जाएगी।

एनएसई के अनुसार, प्री ओपन सेशन हर कारोबारी दिन सुबह 9 बजे से शुरू होकर 9:15 बजे तक चलेगा। इस दौरान सुबह 9:00 बजे से 9:07 बजे तक ट्रेडर्स को अपने ऑर्डर डालने, बदलने या रद्द करने की अनुमति होगी। सुबह 9:07 से 9:08 बजे के बीच रैंडम क्लोजर की प्रक्रिया होगी, जिसके बाद 9:12 बजे तक मूल्य निर्धारण और ट्रेड मिलान की प्रक्रिया चलेगी। अंत में तीन मिनट के बफर टाइम के बाद सुबह 9:15 बजे से रेगुलर ट्रेडिंग सेशन शुरू हो जाएगा।

शुरुआती चरण में यह सुविधा सिर्फ सिंगल स्टॉक्स और इंडेक्सों पर चालू महीने के वायदा सौदों पर लागू होगी। एक्सपायरी से पहले के अंतिम पांच कारोबारी दिनों में यह अगले महीने के कॉन्ट्रैक्ट्स पर भी लागू की जाएगी। हालांकि इस व्यवस्था में फिलहाल ऑप्शन, स्प्रेड और कॉर्पोरेट-एक्शन एक्स-डेट को शामिल नहीं किया गया है।

प्री ओपन सेशन के दौरान ट्रेडर्स को रियल टाइम में इंडीकेटिव ओपनिंग प्राइस और ऑर्डर इम्बैलेंस डेटा दिखाई देगा। इससे बाजार के मूड का अंदाजा पहले ही लगाया जा सकेगा।

इस प्री ओपन सेशन में ट्रेडर्स लिमिट और मार्केट ऑर्डर दोनों का इस्तेमाल कर सकेंगे। हालांकि स्टॉप-लॉस और आईओसी (इमीडिएट ऑर कैंसल) ऑर्डर की अनुमति नहीं होगी। अगर कोई ऑर्डर बेमेल (unmatched) रह जाता है, तो लिमिट ऑर्डर अपने ओरिजिनल टाइम-स्टैम्प के साथ नॉर्मल मार्केट में चला जाएगा, जबकि बेमेल मार्केट ऑर्डर को डिस्कवर्ड ओपनिंग प्राइस पर लिमिट ऑर्डर में बदल दिया जाएगा।

विशेषज्ञों का मानना है कि एनएसई का यह कदम बाजार की पारदर्शिता और स्थिरता को और मजबूत करेगा। इससे ट्रेडर्स को बाजार खुलने से पहले मांग और आपूर्ति की दिशा समझने में मदद मिलेगी।

छत्तीसगढ़ में दर्दनाक सड़क हादसा: तेज रफ्तार कार ने बाइक को मारी टक्कर, दो सगे भाइयों की मौत, तीसरा भाई गंभीर रूप से घायल

(जीएनएस)। महासमुंद। छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले में मंगलवार को हुए एक दर्दनाक सड़क हादसे ने पूरे क्षेत्र को झकझोर कर रख दिया। सरायपाली थाना क्षेत्र में परसदा गांव के पास एक तेज रफ्तार कार ने बाइक सवार तीन भाइयों को इतनी जोरदार टक्कर मारी कि दो सगे भाइयों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि तीसरा ममेरा भाई गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे के बाद कार चालक वाहन छोड़कर मौके से फरार हो गया।

मिली जानकारी के अनुसार, मृतकों की पहचान 32 वर्षीय जयराम नागवंशी और 16 वर्षीय ओम प्रकाश नागवंशी के रूप में हुई है, जबकि गंभीर रूप से घायल युवक का नाम लिंगूराज नागवंशी (16 वर्ष) बताया जा रहा है। तीनों भाई मूल रूप से रायगढ़ और जशपुर जिले के निवासी थे और एक परिजन के गमी कार्यक्रम में शामिल होने के लिए बाइक से यात्रा कर रहे थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, घटना मंगलवार शाम करीब पांच बजे की है, जब तीनों युवक लोहांडीगुड़ा, जगदलपुर से रायगढ़ की ओर जा रहे थे। तभी परसदा के पास विपरीत दिशा से आ रही तेज रफ्तार कार ने उनकी बाइक को सामने से टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बाइक के परखच्चे उड़ गए और जयराम व ओमप्रकाश ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। आसपास के लोग जब तक कुछ समझ पाते, तब तक कार चालक वाहन

सहित भागने की कोशिश में था, लेकिन भीड़ देखकर वह कार छोड़कर मौके से फरार हो गया।

स्थानीय ग्रामीणों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। सरायपाली थाना पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों मृतकों के शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा, जबकि गंभीर रूप से घायल लिंगूराज को पहले सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया, जहां से उसकी नाजुक हालत को देखते हुए रायपुर के मेकाहारा अस्पताल रेफर कर दिया गया। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि प्राथमिक जांच में पता चला है कि कार की गति अत्यधिक थी और चालक ने नियंत्रण खो दिया, जिसके चलते यह हादसा हुआ। घटनास्थल से कार को जब्त कर लिया गया है और चालक की तलाश जारी है। पुलिस ने अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ लापरवाही से मौत (धारा 304ए आईपीसी) का मामला दर्ज किया है।

हादसे के बाद मृतकों के घरों में कोहराम मचा हुआ है। दोनों सगे भाई एक ही परिवार से थे और गांव में खेती-बाड़ी करते थे। परिजन गमी कार्यक्रम में शामिल होने के लिए एक साथ निकले थे, लेकिन उन्हें यह नहीं पता था कि यह सफर उनकी जिंदगी का आखिरी सफर साबित होगा। ग्रामीणों और रिश्तेदारों की भीड़ पोस्टमार्टम हाउस और पुलिस थाने के बाहर उमड़ पड़ी।

स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि सड़क पर रफ्तार पर नियंत्रण के लिए ठोस कदम उठाए जाएं, क्योंकि परसदा मार्ग पर अक्सर तेज रफ्तार वाहन गुजरते हैं और पहले भी कई हादसे हो चुके हैं। ग्रामीणों ने कहा कि यह सड़क संकरी है, लेकिन भारी वाहनों और कारों की रफ्तार बहुत अधिक रहती है, जिससे आए दिन दुर्घटनाएं होती हैं।

होटल में छापा, आपत्तिजनक अवस्था में मिले युवक-युवतियां, अनैतिक देह व्यापार का पर्दाफाश — होटल मालिक समेत छह गिरफ्तार

(जीएनएस)। बस्ती। उत्तर प्रदेश के बस्ती जनपद से एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जहां पुलिस ने मंगलवार को हरैया थाना क्षेत्र स्थित एक होटल पर छापा मारकर अनैतिक देह व्यापार का भंडाफोड़ किया। कार्रवाई के दौरान होटल के कमरों से कई युवक-युवतियां आपत्तिजनक अवस्था में मिले। मौके से पुलिस ने होटल संचालक समेत कुल छह लोगों को गिरफ्तार कर लिया, जबकि कई अन्य संदिग्ध मौके से भाग निकले।

पुलिस को लंबे समय से सूचना मिल रही थी कि राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित होटल जीसी पैलेस में अवैध गतिविधियां चल रही हैं। बताया गया कि यह होटल बाहरी जिलों से आने वाले ग्राहकों के लिए देह व्यापार का अड्डा बन चुका था। लगातार मिल रही शिकायतों के बाद पुलिस ने योजना बनाकर मंगलवार को दबिश दी।

क्षेत्राधिकारी (सीओ) संजय सिंह के नेतृत्व में पहुंची पुलिस टीम ने होटल के कई कमरों की तलाशी ली। तलाशी के दौरान पुलिस को कई जोड़े आपत्तिजनक अवस्था में मिले। इसके बाद पुलिस ने तत्काल सभी को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की। छापेमारी के दौरान होटल के कमरों से छह मोबाइल फोन, कुछ आपत्तिजनक सामग्री और नकदी बरामद की गई।

पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार किए गए लोगों में होटल का मालिक हरिश्चंद्र वर्मा भी शामिल है। उसके अलावा गोंडा जिले के संजय मौर्या, गोरखपुर के सत्य प्रकाश यादव, हरैया क्षेत्र के मनोज कुमार और प्रदीप यादव, तथा कप्तानगंज निवासी आशीष मौर्या को गिरफ्तार किया गया है। इन सभी पर पुलिस ने अनैतिक देह व्यापार (निवारण) अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

पूछताछ में बड़ा खुलासा हुआ कि होटल मालिक हरिश्चंद्र वर्मा बाहरी शहरों से लड़कियों को बुलाकर ग्राहकों को उपलब्ध कराता था। यह पूरा नेटवर्क एक संगठित गिरोह के रूप में काम कर रहा था, जो ऑनलाइन माध्यम से भी ग्राहकों तक पहुंचता था। बताया गया कि वर्मा और उसके सहयोगी लड़कियों को मोटी रकम का लालच देकर बुलाते थे, जबकि ग्राहकों से कई गुना अधिक वसूला जाता था।

सीओ संजय सिंह ने बताया कि प्राथमिक जांच में यह भी सामने आया है कि इस होटल में कई दिनों से संदिग्ध गतिविधियां हो रही थीं। स्थानीय लोगों ने कई बार आने-जाने वालों की गतिविधियों पर सवाल उठाए थे, लेकिन होटल प्रशासन ने हर बार इसे "सामान्य बुकिंग" बताकर मामला दबा दिया। अंततः पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर यह कार्रवाई की।

पुलिस अब यह भी जांच कर रही है कि इस नेटवर्क में और कौन-कौन लोग शामिल हैं, और क्या अन्य होटलों में भी इस तरह की गतिविधियां संचालित हो रही हैं। इस मामले के बाद क्षेत्र में सनसनी फैल गई है, क्योंकि जीसी पैलेस होटल राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक व्यस्त इलाके में स्थित है, जहां प्रतिदिन सैकड़ों यात्री ठहरते हैं।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि यह कार्रवाई केवल शुरुआत है। अब राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित सभी होटलों और लॉजों की व्यापक जांच की जाएगी। पुलिस ने चेतावनी दी है कि यदि किसी भी होटल में देह व्यापार या अवैध गतिविधियों का संलिप्तता पाई गई, तो होटल संचालकों के खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई की जाएगी और होटल का लाइसेंस भी निरस्त किया जा सकता है।

स्थानीय लोगों ने इस छापेमारी की सराहना करते हुए कहा कि लंबे समय से इस होटल को लेकर संदेह था। रात के समय संदिग्ध गतिविधियां होती थीं, और कई बार स्थानीय नागरिकों ने शिकायत की थी कि यहां आने-जाने वालों में अधिकांश अजनबी होते हैं। फिलहाल, पुलिस ने सभी गिरफ्तार अभियुक्तों को जेल भेज दिया है और लड़कियों की पहचान कर उनके घर वालों से संपर्क करने की कोशिश की जा रही है। अधिकारी यह भी जांच रहे हैं कि कहीं यह गिरोह मानव तस्करी से जुड़ा तो नहीं। इस पूरी कार्रवाई ने बस्ती जिले में होटल व्यवसायों की पारदर्शिता पर सवाल खड़े कर दिए हैं। प्रशासन का कहना है कि अब किसी भी होटल को बुकिंग से पहले अतिथि की सही जानकारी और पहचान पत्र अनिवार्य रूप से दर्ज करनी होगी।